शिक्षार्थी मार्गदर्शिका

225 - चित्रकला

माध्यमिक पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम समन्वयकर्ता
संचिता भट्टाचार्जी

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
(मानव संस्थान विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्था)
ए-24-25, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-201309
वेबसाइट : www.nios.ac.in, टॉल फ्री नंबर 18001809393

© National Institute of Open Schooling

(Copies)

Published by the Secretary, National Institute of Open Schooling, A-24-25, Institutional Area, NH-24, Sec.-62, Noida-201309, and printed by

आभार

सलाहकार समिति

डॉ. एस.एस. जेना
अध्यक्ष, रा.मु.वि.शि.सं.
नोएडा

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेशक (शैक्षिक)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा

पाठ्यक्रम समिति

प्रो. के.एम. चौधरी
प्रोफेसर (से.नि.)
कॉलिज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली

श्रीमती बी.एम. चौधरी
विजिटिंग लेक्चरर
कॉलिज ऑफ आर्ट
दिल्ली

श्री विनोद कुमार
ड्राईंग शिक्षक
दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड
नई दिल्ली

श्री सुमिताव पॉल
रीडर
शांति निकेतन, प. बंगाल

श्री सुबन्ना
सीनियर ड्राइंग शिक्षक
दिल्ली कन्नड़ सी.से. स्कूल
नई दिल्ली

श्रीमती संचिता भट्टाचार्जी
कोर्स समन्वयक
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा

डॉ. सुनील कुमार
रीडर
एनसीईआरटी
श्री अरविन्दो मार्ग
नई दिल्ली

पाठ लेखक

श्रीमती बी.एम. चौधरी
विजिटिंग लेक्चरर
कॉलिज ऑफ आर्ट
दिल्ली

डॉ. बिंदुलिका शर्मा
रीडर
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

श्रीमती सुष्मिता दास पॉल
कला शिक्षाविद्
नई दिल्ली

श्रीमती सुमित्रा चौहान
कला शिक्षाविद्
नई दिल्ली

संपादक

प्रो. के.एम. चौधरी
प्रोफेसर (से.नि.)
कॉलिज ऑफ आर्ट
दिल्ली

प्रो. नीरेन सेनगुप्ता
भूतपूर्व प्रिंसिपल
कॉलिज ऑफ आर्ट
दिल्ली

श्रीमती संचिता भट्टाचार्जी
कोर्स समन्वयक
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा

अनुवादक

श्री एस.के. गंगल
शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
सीबीएसई, दिल्ली

डॉ० बबीता चौहान
कला शिक्षक
राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय
दिल्ली

श्री जॉय रॉय चौधरी
कला शिक्षक
वायु सेना बाल भारती पब्लिक स्कूल
दिल्ली

संपादन सहायता

श्री सत्य नारायण
डिप्टी फील्ड एडवाइजर (से.नि.)
डी.ए.ई., मा.सं.वि.मं., दिल्ली

श्री दिनेश थपलियाल
सेवा निवृत्त अधिकारी
एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

श्रीमती रिचा जैन
कला शिक्षाविद्
पीतमपुरा, दिल्ली

डी.टी.पी. कार्य
विजय कम्प्यूटर, मयूर विहार, फेस-1, दिल्ली

निदेशक की कलम से

प्रिय शिक्षार्थी,

'स्वपाठी शिक्षार्थियों को अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना' हमारा निरन्तर लक्ष्य रहा है। प्रस्तुत 'शिक्षार्थी मार्गदर्शिका' को पहली बार तैयार किया गया है। इस मार्गदर्शिका में पाठ्य सामग्री के महत्वपूर्ण एवं आवश्यक बिन्दुओं को उजागर किया गया है तथा यह एक ही दृष्टि में आपको पूरे पाठ्यक्रम की झलक प्रदान करती है। कम समय में पाठ्य सामग्री को दोहराने में यह आपके लिए सहायक सिद्ध होगी।

मेरे विचार में यह मार्गदर्शिका विषय को गहराई से समझने के अतिरिक्त परीक्षा में आपके प्रदर्शन को भी और बेहतर बनाने में सहायता करेगी।

आशा है कि पुनरावृति के लिए आप इसका प्रयोग करेंगे और इसको उपयोगी पाएंगे।

उज्जवल और सफल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

सप्रेम।

(डॉ. कुलदीप अग्रवाल)
निदेशक (शैक्षिक)

विषय-सूची

- भूमिका i
- परीक्षा भवन में समय का प्रबन्धन करना iii
- प्रश्नों का उत्तर कैसे दिया जाय iv
- मुक्त विद्या वाणी vi

पाठ संख्या 1.	*(3000 ई० पू० से 600 ईस्वी तक) कला का इतिहास तथा मूल्यांकन*	*01*
पाठ संख्या 2.	*(सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक) कला का इतिहास तथा मूल्यांकन*	*05*
पाठ संख्या 3.	*13वीं शती से 18वीं शती तक कला का इतिहास और मूल्यांकन*	*09*
पाठ संख्या 4.	*भारत की लोक कला*	*13*
पाठ संख्या 5.	*पुनर्जागरण (नवजागरण)*	*17*
पाठ संख्या 6.	*प्रभाववाद*	*21*
पाठ संख्या 7.	*घनवाद, अतियथार्थवाद तथा अमूर्तकला*	*24*
पाठ संख्या 8.	*समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार*	*27*
पाठ संख्या 9.	*समकालीन भारतीय कला*	*30*

प्रयोगात्मक

पाठ संख्या 1.	*वस्तु चित्रण*	*35*
पाठ संख्या 2.	*प्रकृति चित्रण*	*39*
पाठ संख्या 3.	*मानव व पशु आकृतियाँ*	*45*
पाठ संख्या 4.	*संयोजन*	*51*

भूमिका

मनुष्य अपने विचारों और अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए किसी न किसी माध्यम को अपनाते हैं।

पेंटिंग दूसरों के साथ संप्रेषण की एक कला है। यह एक बहुत ही रूचिकर माध्यम है जिससे आप रंगों के द्वारा स्वयं को अभिव्यक्त कर सकते हैं। इसके द्वारा आप आनुपातिक अर्थ-चेतना का विकास कर सकते हैं, रेखाओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति का प्रसंशापूर्ण मूल्यांकन कर सकते हैं तथा चित्र की बनावट और उसकी कलात्मकता का बोध कर सकते हैं। यह पाया गया है कि पेंटिंग को सीखने से शिक्षार्थी में सामाजिक चेतना तथा सौंदर्यपरक अनुभूति और आत्म-विश्वास का विकास होता है। ऐसा भी माना जाता है कि पेंटिंग जैसी कला के द्वारा शिक्षार्थी में ज्ञानात्मक एवं संप्रेषण के कौशल, मनो-दैहिक समन्वय, अभिव्यक्ति, मौलिकता तथा क्रियाशीलता की वृद्धि होती है।

वर्तमान जीवन में पेंटिंग की आवश्यकता और इसके महत्व को दृष्टि में रखते हुए भारतीय, पाश्चात्य और समकालीन कला के मॉड्यूलों को पेंटिंग के इस कोर्स में शामिल किया गया है ताकि शिक्षार्थी पेंटिंग के सैद्धांतिक तथा प्रयोगात्मक कौशलों के ज्ञान की अभिवृद्धि कर सकें। प्रयोगात्मक कौशल जैसे **वस्तु-चित्रण, प्रकृति-चित्रण,** मानव और पशु आकृतियों का चित्रण एवं संयोजन शिक्षार्थी को जीवन में व्यावसायिक पेंटर/चित्रकार बनाने में सहायक होंगे।

शिक्षार्थी मार्गदर्शिका के उद्देश्य

1. अध्ययन समाग्री को अल्प काल में समझने और दोहराने को सुगम बनाने में।
2. विषय सामग्री के ज्ञान को दृढ़ करने में।
3. महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं ओर सूचना के बिन्दुओं पर प्रकाश डालने में।
4. शिक्षार्थी मार्ग दर्शिका इस ढंग से बनाई गई है कि यह अवधारणाओं के आसानी से समझने तथा दोहराने में विद्यार्थियों की सहायता करेगी।
5. शिक्षार्थी मार्ग दर्शिका, शिक्षार्थियों के ज्ञान के आधार में सुधार करेगी ओर परीक्षा में उनके निष्पादन में वृद्धि करेगी।
6. शिक्षार्थी मार्ग दर्शिका शिक्षार्थियों के ज्ञान को संवारेगी जो उन्हें उनके दैनिक मामलों में प्रयोग करने में सहायता करेगा।
7. शिक्षार्थियों की विषय में रूचि का विकास करेगी।
8. शिक्षार्थियों को आगे उच्च स्तर की अवधारणओं का निर्माण करने के लिए, उच्च श्रेणी के साहित्य का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करेगी।

शिक्षक अंकित मूल्यांकन पत्र (T.M.A) के संदर्भ में

शिक्षक अंकित मूल्यांकन पत्र मुक्त ज्ञान पद्यति का अनिवार्य और अभिन्न अंग है। TMA के माध्यम से आपको अपने शिक्षकों के संपर्क में आने का अवसर प्राप्त होगा। इससे, आपको अपने दोषों को जानने और तदनुसार सुधार करने का अवसर उपलब्ध होता है। इससे आपको ठीक प्रकार उत्तर देने में सहायता मिलती है। शिक्षकों के सुझाव/निर्देश आपके अनुरोध किए गए मूल्यांकन पत्रों में आवश्यक सुधार करने में सहायता करेंगे। इससे आपको अपनी परीक्षा में बेहतर निष्पादन करने की तैयारी में सहायता मिलेगी।

- **अच्छा मूल्यांकन पत्र तैयार करें:**

  मूल्यांकन पत्र तैयार करते समय, प्रश्न को समझें तथा ध्यान देने योग्य बिन्दुओं को लिखें। किसी विशेष पाठ का सावधानी पूर्वक अध्ययन करें। कभी-कभी आपको एक से अधिक पाठ से सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है, यदि प्रश्न में आवश्यकता होती है। मूल्यांकन पत्र लिखते समय उचित शीर्षक तथा उपशीर्षक दें। यह सुनिश्चित करें कि सभी मुख्य सूचनाएं शामिल कर ली गई हैं। मूल्यांकन पत्र स्वीकृत आकृति के अनुसार होना चाहिए।

- **शिक्षकों की समीक्षा का प्रतिवादनः**

  शिक्षकों की समीक्षा आपको विषय के ज्ञाम में सुधार तथा वृद्धि करने के सक्षम बनायेगी। यह आपको अपने दोषों/कमियों को सुधारने/ठीक करने में सहायता करेगी। शिक्षकों की समीक्षा, आपकी परीक्षा में बेहतर निष्पादन करने की तैयारी में सहायता करेगी। इसलिए,यह अनिवार्य और आपके हित में है कि आप शिक्षकों की समीक्षा का सकारात्मक रूप से प्रतिवादन करें।

परीक्षा का सामना करना

परीक्षा, परीक्षा देने वाले (शिक्षार्थी) को किसी विशेष विषय में उसके ज्ञान और उसकी योग्यता के स्तर का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करती है।

परीक्षा की तैयारी करने की युक्तियां

(i) अपने पाठ/अध्ययन सामग्री को अवश्य दोहराइए।

(ii) स्वयं के आत्मविश्वास के स्तर को ऊंचा रखें।

(iii) परीक्षा के भय से ग्रसित न हों।

(iv) अपने परीक्षा केन्द्र पर समय से पहुँचिए।

(v) ध्यान रखिए कि आपको अपने सभी प्रश्नों के उत्तर निर्धारित समय से पहले पूरे करने हैं जिससे कि उत्तर पुस्तिका को दोहराने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी प्रश्नों के उत्तर दे दिए गए हैं, काफी समय बचा रहे।

- **पेंटिंग में प्रयोगात्मक परीक्षा की तैयारी के लिए कुछ महत्वपूर्ण याद रखने वाले बिन्दुः**

  – प्रयोगात्मक परीक्षा में वस्तु-चित्रण, प्रकृति-चित्रण, मानव और पशु आकृतियां तथा संयोजन सम्मिलित हैं।

  – प्रयोगात्मक परीक्षा में अच्छे प्रदर्शन के लिए शिक्षार्थियों द्वारा अग्रिम गहन अभ्यास सहायक होगा।

  – प्रयोगात्मक परीक्षा में प्रयोग में आने वाली सामग्री को लाना न भूलें, जैसेः

    - ड्राइंग बोर्ड
    - ड्राइंग पिन्स
    - पेंसिलें (एचबी, 2बी, 4बी, 6बी)
    - रबर
    - रंग-पेस्टल, पेंसिल रंग, जल-रंग, पोस्टर रंग, स्केच पेन
    - ब्रश-विभिन्न नंबर के गोलाकार व चपटे
    - रंगों का मिश्रण करने वाले पैलेट
    - जल-पात्र

शिक्षार्थी द्वारा प्रयोग की जाने वाली अन्य सामग्री जैसे कैंची, स्केल, फेविकोल, पेंसिल कटर, पोर्टफोलियो, इत्यादि।

परीक्षा से पूर्व तथा परीक्षा के दौरान समय प्रबंधन

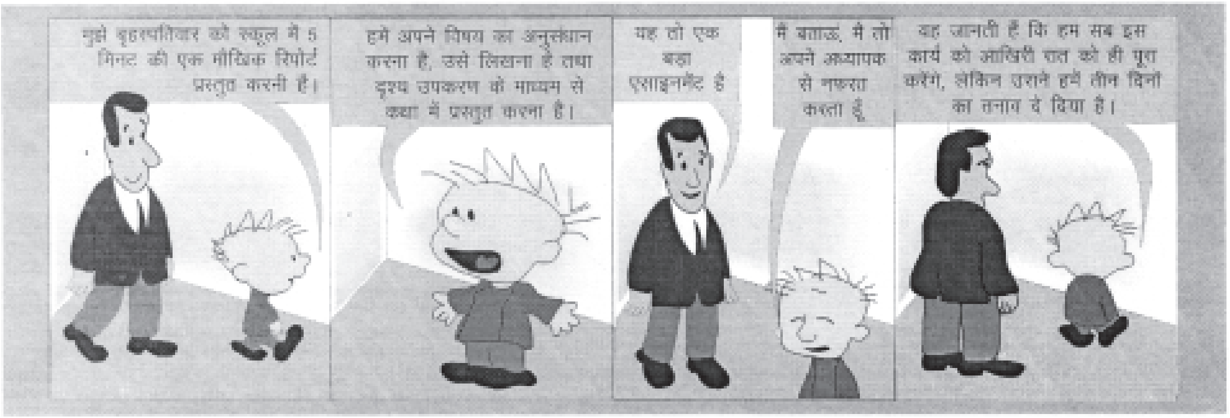

क्या यह जाना पहचाना लगाता है? अधिकतर बच्चे अपना काम अंतिम क्षणों के लिए छोड़ देते हैं और इस कारण तनाव होने पर अपना काम अच्छे से नहीं कर पाते हैं। यदि आप अपने समय की योजना बनाएं और सुव्यवस्थित रुप से कार्य करें तो क्या इससे आपको मदद मिलेगी?

क्या आपने यह कहावत सुनी है, 'अपने समय का प्रबंधन कीजिए नहीं तो समय आपका प्रबंधन करेगा'? यह सत्य है। दूसरी ओर, वास्तव में आप समय का प्रबंधन नहीं कर सकते हैं क्योंकि समय किसी का पाबंद नहीं है - हर किसी के पास दिन में 24 घंटे और एक सप्ताह में 168 घंटे हैं। इसलिए, आप केवल समय के अनुसार स्वयं का प्रबंधन कर सकते हैं।

समय प्रबंधन के लाभ	
तनाव में कमी	**जीवन में संतुलन**
एक लंबी समयावधि में परीक्षा की तैयारी करना कम तनावपूर्ण है जबकि परीक्षा से कुछ घंटे पूर्व पूरे पाठ्यक्रम को रटना अधिक तनावपूर्ण है।	हर समय पढने का यह अर्थ नहीं है कि आप एक अच्छे विद्यार्थी हैं। आपको अन्य काम भी करने होते हैं। आपको आराम करने का समय भी चाहिए। यह सभी विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है।
परिणामों में वृद्धि	**लक्ष्यों की प्राप्ति**
अधिक घंटों तक कार्य करने से आपकी गति कम हो जाती है और थकान भी होती है। अपने समय का उपयोग अधिक कुशलतापूर्वक करें। विशिष्ट समय के भीतर सम्पूर्ण कार्य की योजना तैयार करें।	लक्ष्यों को निर्धारित करना कार्य के लिए स्वयं को प्रोत्साहित करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। इससे कार्य को लंबित न करने तथा पूरे न किए गए कार्यों के प्रति उत्पन्न तनावों को कम करने में मदद मिलती है।

उपलब्ध समय का उपयोग कुशलतापूर्वक करें: नियमित बने रहें

पाठ्य सामग्री का अध्ययन करना तथा उसे याद रखना

- कक्षा से पूर्व उसको पढ़ें
- अपनी कक्षा में जाएं
- कक्षा के बाद दोहराएं
- परीक्षा से पहले दोहराएं

परीक्षा के लिए अध्ययन करना: बेहतर समय प्रबंधन के सुझाव

छोटे भागों में योजना बनाएं

उदाहरण के लिए, एक घंटे के लिए योजना बनाएं। आप वास्तव में केवल अधिकतम 45 मिनटों के लिए ही एकाग्रता के साथ पढ़ पाएंगे, इसलिए उसके पश्चात 15 मिनट के विराम की योजना बनाएं।

सटीकता की योजना

- यह स्पष्ट रुप से दर्शाएं कि उस समय के भीतर आपने क्या कार्य पूरा करने की योजना बनाई है।
- बिना सटीकता के साथ योजना का उदाहरण:
  - गृह विज्ञान: 2 - 4 बजे
  - जीव विज्ञान: 5 - 7 बजे
- सटीकता के साथ योजना बनाने का उदाहरण:
  - गृह विज्ञान: अध्याय - भोजन के कार्य;
  - जीव विज्ञान: श्वसन तंत्र

मस्तिष्क में अंत तक की योजना बनाएं

- अपने लक्ष्य से आरंभ करें। अपनी परीक्षा की समयसारणी को देखें और उसके अनुसार नीचे से ऊपर की ओर कार्य करें।
- परीक्षा के लिए, प्रत्येक सप्ताह तक पूरे किए जाने वाले विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करें।

प्रश्नों का उत्तर कैसे दिया जाय

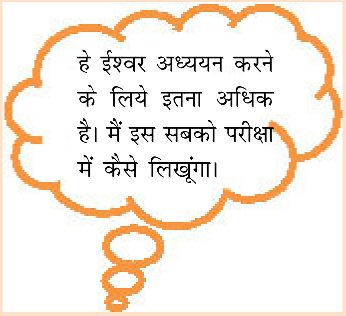

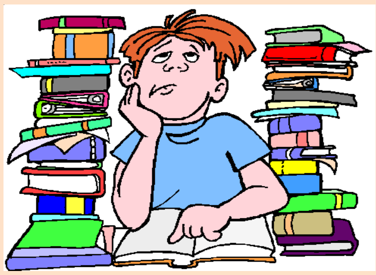

प्रश्नों के उत्तर देने की युक्तियां

1. संपूर्ण प्रश्न पत्र को पढ़िए।
2. निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़िए।
3. अपने समय की उसी ने अनुसार योजना बनायें।
4. पढ़ते समय आपके मस्तिष्क में आने वाली किसी भी बात को संक्षेप में लिखें, जिससे आप उसे भूल न जायें।
5. उत्तर देने से पूर्व, प्रश्न को पूर्ण रूप से पढ़ लें। यदि कोई भाग हो तो उसकी संख्या दें और उत्तर की एक रूप रेखा तैयार कर लें जिससे कि आप किसी बिन्दु को भूल न जायें।
6. अपने उत्तर की पहली पंक्ति के रूप में प्रश्न को दोबारा लिखें।
7. विसंगत विस्तार में न जायें।
8. यदि आप अनिश्चित हैं अथवा किसी पर अटक जायें तो आगे बढ़ जायें।
9. दोहरे वाक्य लिखने से बचें।
10. शब्द सीमा का हमेशा पालन करे।
11. यदि आप किसी उत्तर पर अटक जाते हैं तो दूसरा प्रश्न करें और इसे अंत में हल करें।

प्रश्नों के प्रकार

1. बहु विकल्प
2. अति लघु उत्तर
3. लघु उत्तर
4. दीर्घ उत्तर अथवा निबन्ध प्रकार के

प्रश्न जिनमें दीर्घ उत्तरों की आवश्यकता होती है, या तो वाक्य खण्ड के रूप में अथवा निबन्ध के रूप में निर्देश में दिये गये शब्दों पर सम्भावित शब्दों की सूची और उनका क्या अर्थ है, नीचे दी गई है। ध्यान केन्द्रित करे।

1. शब्द, जो आप से प्रश्न के विषय में जो कुछ आप जानते हैं, उनका उल्लेख करने के लिए पूछे जाते हैं।

- **वर्णन कीजिये**– विवरण दीजिये, विषय में बताइये, शब्द के रूप में चित्रित कीजिये। उदाहरण के लिए, जिस प्रकार की वस्तुओं का हम उपभोग करते हैं, उनका विवरण दीजिये।
- **बाद विवाद कीजिये**– विस्तार पूर्वक शास्त्रार्थ कीजिये, विभिन्न आधारों से विचार कीजिये, विभिन्न दिशाओं से प्रस्तुत कीजिये। उदाहरण के लिए, किसी अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं पर बाद विवाद कीजिये।
- **पुनर्विचार कीजिए**– किसी विषय का आलोचनात्मक निरीक्षण कीजिये, इसके द्वारा बनाए गए मुख्य उल्लेखों का विश्लेषण और उनकी समीक्षा करना उदाहरण के लिए, स्वंत्रतता से पूर्व भारत की आर्थिक स्थिति पर पुनर्विचार कीजिए।

- **उल्लेख कीजिये**- मुख्य बिन्दुओं को संक्षेप में प्रस्तुत कीजिये, स्पष्ट श्रेणी में, आम तौर पर विस्तार के बिना, दृष्टान्त अथवा उदाहरण। उदाहरण के लिए पूर्ण प्रतियोगिता की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
- **व्याख्या कीजिए**- स्पष्ट कीजिये; भाषान्तर में वर्णन कीजिए; बताइये कि कैसे किया जाय। उदाहरण के लिए, मुद्रा के कार्यों की व्याक्ष्या कीजिए।

2. मुख्य विचार जानने के लिये शब्द

- **गणना कीजिये**- संक्षेप में बिन्दुओं को एक एक करके दीजिए।
- **सूचीबद्ध कीजिए**- संक्षिप्त कथनों की मदों के अनुसार शृंखला लिखिए।
- **रूप रेखा दीजिए**- मुख्य बिन्दुओं तथा उपबिन्दुओं पर, मुख्य सविस्तार व्याख्या को छोड़कर वर्णन की व्यवस्था कीजिये। उदाहरण के लिये - वस्तु विनिमय प्रणाली के दोषों की रूपरेखा दीजिए।
- **संक्षिप्त कीजिए**-मुख्य तथ्यों को संक्षिप्त आकार में प्रस्तुत कीजिए अर्थात एक दो परिच्छेद में
- **पता लगाइये**-उन्नति, विकास या कुछ मूल बिन्दुओं से घटना का वर्णन कीजिए। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था की संवृद्धि का पता लगाइये।
- **विश्लेषण कीजिए**-भूतकाल के संदर्भ में संपूर्ण पर वाद विबाद कीजिए, उदाहरण के लिए, समाज में मुद्रा की आवश्यकता का विश्लेषण कीजिए।

3. विशिष्ट विशेषताओं अथवा कुछ सीमित तथ्यों को जानने वाले शब्दः

- **तुलना कीजिए**- समानता के बिन्दुओं तथा अन्तर के बिन्दुओं को प्रकाशित कीजिए।
- **भेद का प्रदर्शन कीजिए**- अन्तर के बिन्दुओं को प्रकाशित कीजिये, उदाहरण के लिए, एक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था में अन्तर कीजिए।
- **परिभाषित कीजिए**- किसी शब्द अथवा अवधारणा का अर्थ बताइये। इसे उस वर्ग में रखिये। जिससे यह सम्बन्ध रखता है और इसे उसी वर्ग के अन्य मदों से दूर रखिये, उदाहरण के लिए, मुद्रा की परिभाषा दीजिए।
- **रेखाचित्र**- एक आरेख, चार्ट, योजना अथवा रेखाचित्र के रूप में अर्थ बताइए।
- **उदाहरण देकर समझाइये**- किसी समस्या को स्पष्ट करने के लिए किए आकृति, चित्र अथवा रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।
- **सम्बन्ध स्थापित कीजिए**- उत्तर में स्पष्ट कीजिए कि वस्तुएं किस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्धित हैं।
- भाषान्तर में वर्णन कीजिए-अनुवाद कीजिए; उदाहरण दीजिए; किसी विषय पर समीक्षा दीजिए।

4. आपकी समर्पित विचारधारा को जानने वाले शब्दः

- **आलोचना कीजिए**- किसी मुद्दे अथवा मद के गुण या सच्चाई के विषय में अपने विचारों का उल्लेख कीजिए। आलोचना समर्थन या विरोध के रूप में हो सकती है।
- **मूल्यांकन कीजिए**- अच्छे अथवा बुरे बिन्दु स्पष्ट कीजिए। लाभ और हानि पर वाद विवाद करने के मूल्य के बारे में विचार दीजिए।

मुक्त विद्या वाणी

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (रा.मु.वि.शि.सं.) द्वारा सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के अधिकाधिक प्रयोग से शैक्षिक कार्यक्रमों के गुणवत्तापूर्ण निष्पादन और शिक्षार्थियों को उनकी सुगमतापूर्ण उपलब्धता में सहायता मिली है। रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा मुक्त विद्या वाणी को विश्व-व्यापक वैब (www) पर प्रवर्तन एक आधुनिक सह-विमर्श, सह-भागिता और मूल्य-प्रभावी कार्यक्रम है। ऑडियो और वीडियो कार्यक्रमों की प्रस्तुति रा.मु.वि.शि.सं. द्वारा प्रस्तावित बहु-चैनल पैकेज के बहुत महत्वपूर्ण घटक/अंग हैं।

पेंटिंग में ऑडियो कार्यक्रम मुद्रित स्व-अधिगम सामग्री और व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों आदि में सहायक हैं। शिक्षार्थी ऑडियो कार्यक्रमों के द्वारा पेंटिंग को स्पष्टता से समझने में समर्थ होंगे।

शिक्षार्थी रा.मु.वि.शि.सं. के वेबसाइट (www.nios.ac.in) को लॉग कर मुक्त विद्या वाणी का पूरा लाभ ले सकते हैं।

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
1	3000 ई॰ पू॰ से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन	1

संक्षिप्त भूमिका

- **सिन्धुघाटी सभ्यता** (2500 ई॰ पू॰ से 1750 ई॰ पू॰) से **मौर्य वंशावली** (तीसरी सदी ईस्वी) तक हम कला एवं हस्तकला की धीरे-धीरे प्रगति होती हुई देखते हैं।
- **हड़प्पन युग** के कलाकार उच्च कोटि के थे।
- **अशोक युग** में कला के उच्च स्तरीय नमूने के स्तम्भ भारतीय कला की धरोहर हैं।
- इसी युग में मध्य प्रदेश में स्थित **सांची** के **विशाल स्तूप** व **मूर्तिकला** के उदाहरण देखने को मिलते हैं।
- भारतीय कला के इतिहास में **गुप्तकालीन युग** को **स्वर्ण युग** माना जाता है।
- **मथुरा, सारनाथ, उज्जैन, अहिछत्र** तथा कुछ अन्य नगर इस युग में कला के मुख्य केन्द्रों के रूप में जाने जाते थे।
- धार्मिक मूर्तिकला में **दैवीय गुण** देखने को मिलते हैं।
- इसी युग में **अजंता** के प्रसिद्ध चित्र बनाये गए थे।
- इस काल में गुफा तथा मन्दिर वास्तुकला के अंतर्गत मध्य प्रदेश की **उदयगिरि गुफायें** तथा **नाचना** व **भूमरा** के मन्दिर उल्लेखनीय हैं।

1.1

नृत्यांगना

विवरण

शीर्षक : नृत्य करती हुई लड़की

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : कांस्य

स्थान : मोहनजो-दाड़ो

काल : हड़प्पन काल (2500 ई॰ पू॰)

आकार : लगभग 4 इंच

संकलन : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

मूर्ति की विशेषतायें

- प्रस्तुत मूर्ति कांस्य की बनी है।
- यह सिन्धु घाटी के कलाकारों की कलात्मकता और तकनीकी कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- यह मूर्ति देखने में काफी पतली एवं लंबी तथा इसमें एक लयात्मकता है।
- इसे निर्वस्त्र दिखाया गया है। साथ ही इसके बायें हाथ में लगभग कंधों तक चूड़ियां पहनी हुई दिखाई गई हैं ठीक उसी तरह जैसे हम गुजरात और राजस्थान के क्षेत्रों में आजकल के आदिवासी लोगों को देखते हैं।
- यह अपनी कमर पर दायां हाथ रखकर तथा बायां हाथ अपनी बायीं जांघ पर रखे हुए आराम की अवस्था में खड़ी है, साथ ही जूड़े के तौर पर उसके बाल बांधे गए हैं।
- इसकी ऊंचाई केवल 4 इंच के लगभग है।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- नृत्यांगना की मूर्ति में कलाकार द्वारा कलात्मक विशेषताओं व कारीगरी का मित्रण बहुत ही कुशलता से किया गया है।
- इस मूर्ति को ढालने में उस युग के कलाकारों की धातु पर कलाकृति बनाने के गुण स्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं।
- नृत्यांगना में धातु पर ढालने की कला–कौशल का उच्च स्तरीय प्रदर्शन हुआ है।

स्व–मूल्यांकन

1.1.1 'नृत्यांगना' मूर्ति में प्रयुक्त माध्यम का नाम बताइए।

1.1.2 मूर्ति की ऊंचाई का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

1.1.1 कांस्य

1.1.2 लगभग 4 इंच

1.2

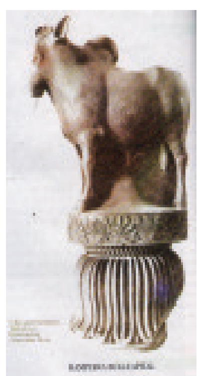

रामपुरवा बुल कैपिटल

विवरण

शीर्षक : रामपुरवा बुल कैपिटल

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : पॉलिश किया हुआ बलुआ पत्थर (सैंड स्टोन)

स्थान : रामपुरवा

काल : मौर्य काल (ई० पू० तीसरी सदी)

आकार : लगभग 7 फीट

संकलन : भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

मूर्ति की विशेषतायें

- अशोक के काल में जितने भी शीर्ष बने हैं, उनमें बुल कैपिटल सबसे प्रसिद्ध मूर्तियों में माना जाता है
- इसका नाम उसके उपलब्ध होने के स्थान रामपुरवा के आधार पर जाना जाता है।
- इसका आधार एक घंटी के आकार के उल्टे कमल से बना है, जिसके बाद शीर्ष पर एक राजकीय बैल है।
- शीर्षफलक के चारों ओर पेड़ पौधों के नमूने बने हैं।
- कमल तथा शीर्षफलक के ऊपर बैल की आकृति हावी होती दिखाई देती है।

इस मूर्तिकला के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- विद्वानों के अनुसार इस प्रकार की मूर्तिकला की प्रेरणा प्राथमिक मध्य–पूर्व अथवा ग्रीक शैली से प्राप्त हुई होगी।
- इस प्रकार की मूर्तिकला अत्यंत सूक्ष्म एवं विशुद्ध नक्काशी का उदहारण है।
- बैल पर की गई खुदाई स्पष्टतः भारतीय मूर्तिकारों की कला की उत्कृष्टता को दर्शाती है।
- बुल कैपिटल की निजी विशेषता उस पर की गई पॉलिश की चमक है।
- विद्वानों के मतानुसार अच्छी पॉलिश करने की योग्यता मध्यपूर्व के मूर्तिकारों से सीखी गई।

स्व-मूल्यांकन

1.2.1 बुल कैपिटल किस स्थान में पाया गया?

1.2.2 बुल कैपिटल का आधार क्या है?

1.2.3 बुल कैपिटल के शीर्षफलक पर क्या बना है?

उत्तर

1.2.1 रामपुरवा।

1.2.2 इस शीर्ष का आधार एक घण्टी के आकार के उलटे कमल से बना है

1.2.3 पेड़-पौधों के नमूने

1.3

अश्वेत राजकुमारी

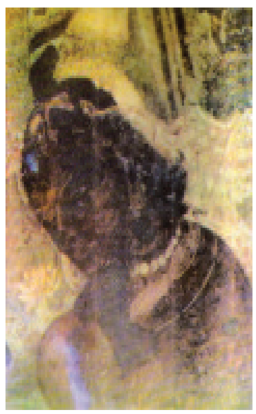

विवरण

शीर्षक : *अश्वेत राजकुमारी*

कलाकार : *अज्ञात*

माध्यम : *भित्तिचित्र*

स्थान : *अजन्ता*

काल : *गुप्त-बाकाटक काल (दूसरी शताब्दी ई॰ से छठी शताब्दी ई॰)*

आकार : *20 फीट × 6 फीट (लगभग)*

कलाकार : *अज्ञात*

चित्र की विशेषतायें

- अजन्ता चित्रों में **अश्वेत राजकुमारी** सर्वोत्तम कृतियों में से एक मानी जाती है।
- चित्र में संगीत की गीतात्मकता का अनुभव होता है।
- शरीर के अंगों की परिरेखाओं की कोमलता, गर्दन का सूक्ष्म झुकाव तथा सरलता इस चित्र को एक दिव्य विशेषता प्रदान करती है।
- जिन रंगों का प्रयोग किया गया है, वे अत्यंत सहज हैं तथा उनमें चटकीलेपन का अभाव है।

अजन्ता चित्रों के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- महाराष्ट्र में औरंगाबाद जिले के निकट अजन्ता गुफायें हैं, जहाँ ये चित्र बनें।
- इन गुफाओं की संख्या 30 है, जिनका उपयोग चैत्यों (पूजा के स्थान) तथा विहारों (मठों) के रूप में होता था।
- अजन्ता की कलाकृतियां दो चरणों में पूरी हुई-हीनयान तथा महायान।
- अजन्ता चित्रों में टैम्परा पद्धति का प्रयोग किया गया है।
- इन चित्रों के विषय धार्मिक होने के साथ ही कल्पनात्मक भी हैं।

स्व-मूल्यांकन

1.3.1 अधिकांश अजंता चित्र किस युग में बने, बताइए।

1.3.2 अजंता चित्र किन चरणों में बनें, बताइए।

1.3.3 अश्वेत राजकुमारी में किस प्रकार के रंगों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर

1.3.1 गुप्त-बाकाटक काल (दूसरी शताब्दी ई॰ से छठी शताब्दी ई॰)।

1.3.2 हीनयान तथा महायान।

1.3.3 अत्यंत सहज रंग, जिनमें चटकीलेपन का अभाव है।

क्या आप जानते हैं?

- सिंधुघाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल मोहनजो-दाड़ो तथा हड़प्पा हैं।
- यद्यपि नृत्यांगना की ऊंचाई केवल 4 इंच है, वह देखने में बड़ी प्रतीत होती है।
- अच्छी पॉलिश करने का कौशल मौर्य युग के मूर्तिकारों ने मध्य-पूर्व के मूर्तिकारों से सीखा था।
- हड़प्पन काल के कलाकार अत्यंत कुशल थे।

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
2	**सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन**	1

संक्षिप्त भूमिका

- भारतीय कला के इतिहास में **गुप्त काल** के बाद का समय **मन्दिर वास्तुकला** की प्रगति का युग कहलाता है।
- दक्षिण में **पल्लव, चोल** तथा **होयसल** एवं पूर्व में **पाल, सैन** और **गंगा वंशों** ने इस प्रगति को सहेजा तथा इसे प्रोत्साहन दिया।
- **पल्लव** और **चालुक्य** उनकी मूर्तिकला के लिए याद किए जाते हैं जबकि **चोल** और **होयसल** मन्दिर वास्तु कला के लिए जाने जाते हैं।

2.1

अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण

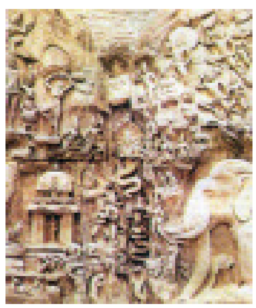

विवरण

शीर्षक : अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण

शिल्पकार : अज्ञात

माध्यम : पत्थर

स्थान : मामल्लापुरम् (चैन्नई)

काल : पल्लव काल (सातवीं शताब्दी)

आकार : 91 फीट × 152 फीट

मूर्ति की विशेषतायें

- यह मूर्तिशिल्प दो शिलाखण्डों पर उभरा हुआ है।
- इस मूर्ति में विभिन्न आकार के मनुष्य व पशुओं को झुण्ड के रूप में उड़ते हुए दिखाया गया है।
- इन शिलाखण्डों के बीच में दरार है।
- पशु आकृतियां कलाकारों के गहन अवलोकन को दर्शाती हैं जैसे सोते हुए हाथी का बच्चा, बंदर की आकृति, नासिका को खुजलाता हिरण।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- इस उभरी हुई मूर्तिकला में **अर्जुन के चिन्तन** एवं योगियों को ध्यान मग्न अवस्था में दिखाया है तथा कुछ विद्वानों ने उसे **गंगावतरण** नाम दिया है जिसमें शंकर भगवान को पृथ्वी पर आती हुई गंगा को अपनी जटा में रोकते हुए दिखाया है।
- इस मूर्ति में गति तथा विशालता है।

स्व-मूल्यांकन

2.1.1 **अर्जुन का चिन्तन** का दूसरा नाम बताइये?

2.1.2 किस राजवंश में **अर्जुन का चिन्तन** की मूर्तिकला का निर्माण हुआ?

2.1.3 **अर्जुन का चिन्तन** में भीड़ में योगियों को किस अवस्था में दिखाया गया है।

उत्तर

2.1.1 गंगावतरण

2.1.2 पल्लव वंश

2.1.3 ध्यान मग्न अवस्था

2.2

गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

विवरण

शीर्षक : गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

शिल्पकार : अज्ञात

माध्यम : पत्थर

स्थान : बैलुर

काल : होयसल काल

आकार : 3 फीट

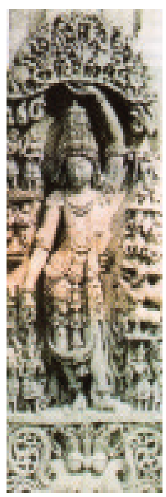

मूर्ति शिल्प की विशेषताएं

- यह मूर्ति होयसल काल की एक सर्वोत्तम कृति का उदाहरण है।
- समस्त घटना को अलग-अलग परतों में दिखाया गया है, तथा कृष्ण को मुख्य केन्द्र के रूप में दर्शाया गया है।
- कृष्ण को वीरोचित नायक के रूप में दर्शाया गया है पर उनकी मुद्रा तथा अंगों में लयात्मकता से संयोजन में कोमलता का अनुभव होता है।
- कृष्ण को घेरे हुए पशुओं का सजीव चित्रण किया गया है।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- मन्दिर वास्तुकला होयसल काल की एक महत्वपूर्ण गतिविधि थी।
- सुन्दर मूर्तिकला होयसला मूर्तिकला का अभिन्न अंग थी।
- दक्कन के प्रमुख राजवंश के नाम पर होयसला शैली का नाम रखा गया।
- बैलुर में होयसला के आदिकालीन मन्दिर मिले हैं।

स्व-मूल्यांकन

2.2.1 उस जगह का नाम बताएं जहां होयसला काल के मन्दिर पाए जाते हैं।

2.2.2 कृष्ण को किस आकार में दर्शाया गया है, बताएं।

2.1.3 क्लिष्ट और सूक्ष्म होयसला नक्काशी का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर

2.2.1 बैलुर

2.2.2 वीरोचित नायक के रूप में दर्शाया गया है।

2.1.3 गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण।

2.3

कोणार्क की सुरसुन्दरी

विवरण

शीर्षक : कोणार्क की सुरसुन्दरी

शिल्पकार : अज्ञात

माध्यम : पत्थर

स्थान : कोणार्क (ओड़िशा)

काल : गंगराजवंश (12वीं शताब्दी)

आकार : वास्तविक आकार से कुछ ज्यादा

मूर्ति की विशेषतायें

- कोणार्क मन्दिर में बनाई गई **सुरसुन्दरी** की हृष्ट-पुष्ट पुष्ट मूर्तियों को बहुत ही कोमलता से बनाया गया है।
- **सुरसुन्दरी** को एक ढोलक बजाते हुए दिखाया गया है।
- अपनी विशालता के साथ रमणीय **सुरसुन्दरी** को कोमलता से तराशे हुए आभूषण अपने वक्ष स्थल पर पहने हुए दर्शाया गया है।
- **सुरसुन्दरी** लयात्मक रूप में दर्शाई गई है।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **राजा नरसिंह देव प्रथम** द्वारा बनाया गया **कोणार्क का सूर्य मन्दिर** ओड़िशा वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- यह मन्दिर अपनी विशालकाय मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
- **सुरसुन्दरी** एक नारी संगीत समूह का अंग है और इनको मन्दिर में उपयुक्त स्थानों पर बनाया गया है।

स्व-मूल्यांकन

2.3.1 **सूर्य मन्दिर** किस राजा द्वारा बनाया गया और वे किस **राजवंश** के थे।

2.3.2 **कोणार्क के सूर्य मन्दिर** की मूर्तियों के आकार को स्पष्ट कीजिए।

2.3.3 **सुरसुन्दरी** किस वाद्य-यंत्र को बजाते हुए दर्शाई गई है।

उत्तर

2.3.1 राजा नरसिंह देव, गंगा राजवंश।

2.3.2 वास्तविक आकार से बड़ी।

2.3.3 सुर सुन्दरी ढोलक बजाते हुए दर्शाई गई है।

क्या आप जानते हैं?

- पल्लव अपने मूर्तिकला कार्य के लिए प्रसिद्ध थे।
- पल्लव वंश में मामल्लापुरम् तथा काँचीपुरम कला के मुख्य केन्द्र बने।
- महाबलिपुरम में **पंचरथ, अर्जुन का चिन्तन मण्डप** तथा उभरी हुई मूर्तिकला दर्शाई गई है।
- **पल्लवों** के पश्चात् दक्षिण भारतीय क्षेत्र में जिन राजवशों ने शासन किया उनमें **चालुक्य, चोल** तथा **होयसल** प्रमुख थे।
- पूर्वी भारत में **गंग राजवंश** प्रमुख और प्रतिष्ठित राजवंश हुए। इस राजवंश के शासकों ने ही ओड़िशा में स्थित कोणार्क में शानदार राजसी **सूर्य मन्दिर** का निर्माण कराया।

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
3	**13वीं शती से 18वीं शती तक कला का इतिहास और मूल्यांकन**	1

संक्षिप्त भूमिका

- **हिन्दू, जैन** तथा **बौद्ध** धर्म में **सचित्र पाण्डुलिपि** भारतीय कला के इस काल में समृद्ध हुई।
- **बंगाल, गुजरात** तथा **बिहार** इस सचित्र पाण्डुलिपि के प्रमुख केन्द्र थे।
- **बंगाल** तथा **बिहार** में ये पाण्डुलिपियां **पाल वंश** के शासकों के संरक्षण में तैयार हुई जिनमें **पाल शैली** स्पष्ट रूप में दिखाई देती है।
- **जैन धार्मिक पाण्डुलिपियाँ** गुजरात में लिखी एवं चित्रों द्वारा सजाई गई थीं। पाण्डुलिपियाँ पाम पात्र पर लिखी गई एवं सुन्दर चित्रों के लिए स्थान छोड़ा गया।
- इस काल में मन्दिर वास्तु कला का भी विकास हुआ। माउन्ट आबु के दिलवाड़ा संगमरमर के मन्दिर, बंगाल, उड़ीसा में पक्की मिट्टी के बने मन्दिर बहुत सुन्दर हैं।
- 16वीं शती ई॰ से 19 वीं शती ई॰ तक **राजपूत** तथा **मुगल** चित्रकारी काफी फली-फूली और समृद्ध हुई। **राजपूत चित्रकला** में **लोक चित्रकला** तथा **अजन्ता चित्रकला** शामिल थीं जबकि **मुगल चित्रकला** में **फारसी** तथा **राजपूत चित्रकला** का समन्वय था।

3.1

श्रृंगार

विवरण

शीर्षक : श्रृंगार

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : टैम्परा

शैली : गुलेर घराना

काल : 18 वीं शताब्दी

चित्रकला की विशेषतायें

- एक दुल्हन को विवाह के लिए सजाया जा रहा है।
- सामने एक नौकरानी चन्दन का लेप तैयार कर रही है तथा एक अन्य नौकरानी दुल्हन के पैर में पायल पहना रही है।
- दो आकृतियां खड़ी हुई दिखाई गई हैं जिनमें से एक आईना लेकर खड़ी है और दूसरी फूलों की माला बना रही है।
- एक स्त्री किसी सहायिका के सहयोग से दुल्हन के बाल संवार रही है। एक वृद्ध महिला इस सारे क्रियाकलाप का निरीक्षण कर रही है।
- **श्रृंगार** एक विशिष्ट राजपूत चित्रकला है।

गुलेर पेन्टिग के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- कांगड़ा घाटी में **गुलेर** एक छोटा सा राज्य था यह राज्य पहाड़ी शैली के चित्रों के लिए बहुत प्रसिद्ध था। 1450 ई॰ से 1780 के बीच यह शैली काफी समृद्ध हुई।
- **गुलेर लघु चित्रकला** पर **लोक कला** तथा **मुगल लघु चित्र शैली** का प्रभाव पड़ा।
- **गुलेर** चित्रों की विशेषता पौराणिक कृष्ण तथा राधा की प्रेम कथा है जो दिव्य प्रेम का जीवंत प्रतीक है।
- **गुलेर पेटिंग** में **रामायण** तथा **महाभारत** की कहानियों को दर्शाया गया है। इन कहानियों को शाही चित्रों तथा राज सभा के दृश्यों से सजाया गया है।
- संवेदनशील चेहरे, सौम्य व्यवहार तथा रंगों का कोमल मिश्रण **गुलेर शैली** की विशेषताएं हैं।

स्व-मूल्यांकन

3.1.1 **श्रृंगार** चित्र के अग्रभाग में स्त्री द्वारा किए गए क्रियाकलापों के बारे में बताइये।

3.1.2 **गुलेर चित्रकला** की मुख्य विशेषताओं के बारे में बताइये।

उत्तर

3.1.1 एक नौकरानी चन्दन का लेप तैयार कर रही है।

3.1.2 **गुलेर** चित्र की मुख्य विशेषता कृष्ण और राधा की प्रेम कथा है। यह प्रेम कथा आज भी दिव्य प्रेम के जीवंत प्रतीक के रूप में मानी जाती है।

3.2

जैन लघुचित्र (कल्पसूत्र)

विवरण

शीर्षक : कल्पसूत्र

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : पाम की पत्तियों पर टैम्परा

शैली : जैन पाण्डुलिपि चित्र

काल : 15वीं शताब्दी ईस्वी

चित्रकला की विशेषतायें

- **कल्पसूत्र** सूचीबद्ध चित्र जैन धर्म की पुस्तक **''कल्पसूत्र''** में एक चित्र है।
- इस चित्र के संयोजन में समस्त स्थान को कुछ आयतों, चौकोरों में बाँटा दिया गया है। पुरूष, स्त्रियों तथा पशुओं का चित्रण लाल रंग की पृष्ठभूमि में दिखाया गया है।
- प्रत्येक खण्ड में **कल्पसूत्र** की कहानी का अलग-अलग कथाक्रम वर्णित है।
- यह शैली पूरी तरह लोक शैली पर केन्द्रित है जहां आकार में चपटापन है तथा अभिव्यक्ति रूढ़िवादी है जिसमें परिदृश्य का अभाव है।
- प्रवाहपूर्ण रेखाओं और सौंदर्यपरक बिंदुओं के प्रयोग से इस चित्र की सुंदरता को बढ़ाया गया है।

जैन लघुचित्र के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- पूरे भारत में **सातवीं शती** से प्रारम्भ होकर **10वीं** तथा **15वीं** शती तक **जैन लघु चित्रों** का विकास हुआ।
- **जैन धर्म ग्रंथ** जैसे कि **"कालकाचार्य कथा"** तथा **कल्पसूत्र** को **पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, ऋषभनाथ** तथा अन्य तीर्थंकर के चित्रों से सजाया गया है।
- इन चित्रों के मुख्य केन्द्र **पंजाब, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात** तथा **राजस्थान** थे।
- इन चित्रों में मानवी आकृतियां कुछ विशिष्टताओं को दर्शाती हैं।
- ये पाण्डुलिपियां प्रमुख रूप से **पामपत्रों** पर लिखी गई हैं। चित्रों में प्रयुक्त रंग जैसे लाल तथा पीला आस-पास में उपलब्ध रगों से ही बनाए जाते थे।

स्व-मूल्यांकन

3.2.1 **'कल्पसूत्र'** चित्रकृति संयोजन में, स्थान को कैसे बाँटा गया है।

3.2.2 **जैन पाण्डुलिपियों** में किस प्रकार की आकृतियों को बनाया गया है, बताइये।

3.2.3 **जैन लघु चित्रकला** किस काल में विकसित हुई?

उत्तर

3.2.1 स्थान को चौकौर और आयताकार में बाँटा गया है।

3.2.2 **पार्श्वनाथ, नेमिनाथ** तथा **ऋषभनाथ** के चित्रों द्वारा सजाया गया है।

3.2.3 ***7वीं शताब्दी*** से **15वीं शताब्दी ई०।**

3.3

विष्णुपुर टैराकोटा

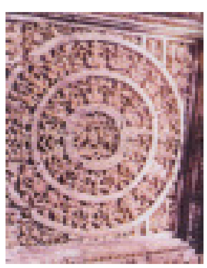

विवरण

शीर्षक : विष्णुपुर टैराकोटा – रासलीला

माध्यम : टैराकोटा की टाइल्स

स्थान : पश्चिम बंगाल के विष्णुपुर में पंचमुरा मन्दिर

काल : 17वीं शती के आस-पास

टेराकोटा की विशेषतायें

- **रासलीला** में राधा कृष्ण के दिव्य प्रेम को उनके साथी ग्वालों तथा गोपियों के सानिध्य में दिखाया गया है।
- इस सुन्दर फलक को एक चौकोर स्थान पर तीन गोलों को केन्द्रित कर संयोजन किया गया है। इन तीन गोलों में से बीच के गोले में एक गोपी के साथ राधा कृष्ण की आकृतियां दिखाई गई हैं।
- कलाकार ने समकालीन सामाजिक जीवन को दर्शाने का पूर्ण प्रयास किया है। चौकोर के चारों कोनो को **मानव, पशुओं** तथा **चिड़ियाओं** की आकृतियों से सजाया गया है।

टेराकोटा के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- पश्चिम बंगाल में **विष्णुपुर** एक छोटा सा शहर है।
- यहां कई मन्दिर हैं जिनको पक्की मिट्टी (टेराकोटा) की टाइल्स से सजाया गया है।
- यह **टेराकोटा कला 18 वीं** तथा **19 वीं शती** की विभिन्न संस्कृतियों तथा धार्मिक घरानों को प्रतिबिंबित करती हैं।
- अधिकांश मन्दिर या तो **शिवजी** या **विष्णुजी** को समर्पित हैं।
- **शिव, दुर्गा** तथा **राधा कृष्ण** की आकृतियां **रामायण** तथा **महाभारत** के पात्रों के साथ इन टेराकोटा टाइल्स में दर्शाई गई हैं।
- मन्दिर वास्तुकला बंगाल की झोपड़ी प्रकार की एक मंजिली या दो मंजिली डिजाइन पर आधारित है।

स्व-मूल्यांकन

3.3.1 **रासलीला** पैनल में गोलाकारों की संख्या स्पष्ट कीजिए।

3.3.2 **रासलीला** पैनल चतुर्भुज के चारों कोनो को कैसे सजाया गया है।

3.3.3 **विष्णुपुर टैराकोटा** टाइल्स में किन आकृतियों और पात्रों को दिखाया गया है, बताइये।

उत्तर

3.3.1 तीन गोलाकार आकृतियों में।

3.3.2 चारों कोनों को **मानव आकृति, पशुआकृति** और **पक्षियों** से सजाया गया है।

3.3.3 **शिव, दुर्गा, राधा-कृष्ण,** एवं **रामायण** तथा **महाभारत** के विभिन्न चरित्र।

क्या आप जानते हैं?

- **13वीं शती** से **18वीं शती** के बीच शक्तिशाली वंशों के पतन के बाद कला के संरक्षकों का अभाव हो गया। परन्तु इस काल में विभिन्न भारतीय धर्म-सम्प्रदायों से सम्बन्धित जैसे हिन्दू, जैन, बौद्ध धर्म आदि की सचित्र हस्तलिपियाँ तथा पाण्डुलिपियाँ काफी संख्या में तैयार हुई जिससे भारतीय कला समृद्ध हुई।
- इस काल में भारत के कुछ भागों में मन्दिर वास्तुकला विकसित हुई जैसे **माउण्टआबु** में दिलवाड़ा के संगमरमर के मन्दिर समूह तथा **बंगाल** और **उड़ीसा** पक्की मिट्टी (टैराकोटा) के बने मन्दिर बहुत सुन्दर हैं।
- **गुलेर लघुचित्र कला** विकास के विभिन्न चरणों को पार करती हुई विकसित हुई। इस पर **लोककला** तथा **मुगल लघु चित्रशैली** का प्रभाव पड़ा। यह लघुचित्र आकार में छोटे थे पर इनमें सौन्दर्य और तकनीकी गुण काफी उच्च कोटि के थे।

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
4	भारत की लोक कला	1

संक्षिप्त भूमिका

- भारत की लोककला में आर्यो से पूर्व की संस्कृति की छाप स्पष्ट दिखाई देती है।
- **तंत्र शक्ति, वैष्णव** तथा **बौद्ध** जैसे सम्प्रदाय लोक कलाकारों के जीवन में महत्वपूर्ण हैं।
- ग्रामीण समाज की कला तथा शिल्प कौशल की वस्तुओं की आवश्यकताएं स्थानीय कलाकारों तथा शिल्पकारों द्वारा पूरी होती हैं। ये आवश्यकताएं मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती हैं:
    - **कर्मकांडी अथवा अनुष्ठानिक**
    - **उपयोगितावादी**
    - **वैयक्तिक**
- कर्मकांडी लोककला भी कई प्रकार की है जैसे **पटचित्र, पिचआई, अल्पना** तथा **कोलम** आदि।
- यह काम किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बिना ग्रामीण कलाकारों द्वारा किया जाता है। यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी दोहराई जाती है। **हड़प्पन** संस्कृति से लेकर पक्की मिट्टी से बने खिलौनों की परिकल्पना में मुश्किल से कोई परिवर्तन आया है।
- कुछ लोककलाकारों ने पुरानी शैली में नए प्रयोग करके कुछ परिवर्तन किये हैं।
- इस प्रकार के नवीन प्रयोग **मधुबनी चित्रकला, कंथा** तथा **कालीघाट पटचित्रों** के मोटिफ में दिखाई देते हैं।

4.1

कोलम

विवरण

शीर्षक : कलश से फर्श पर की गई चित्रकारी
कलाकार : अज्ञात घरेलू महिला
माध्यम : चावल की पिट्ठी तथा रंग
स्थान : तमिलनाडु में तंजावुर के पास एक बस्ती
काल : 1992
शैली : कोलम

कोलम की विशेषतायें

- भारत में हर एक भाग में अलग-अलग माध्यम में फर्श पर सजावट की जाती है। कहीं पर यह **अल्पना**, कहीं **रंगोली, कोलम** तथा **सांझी** कहा जाता है।
- दक्षिण भारत में **पोंगल** तथा अन्य त्योहारों के अवसर पर प्रत्येक घर के सामने तथा पूजा की बेदी के सामने के स्थान पर फर्श पर सजावट का यह कार्य किया जाता है। यह भाग्य और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।
- **कोलम** के **डिजायन** और **मोटिफ** पारंपरिक प्रकृति के तथा साथ ही फूलों के तथा ज्यामितीय स्वरूपों में होते हैं।

कोलम के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- मोटे चावल को पीस कर उसके पाऊडर को अगूंठे तथा आगे की उंगलियों के बीच पकड़ कर कलाकार रचना करते हैं।
- कलाकार का हाथ घूमता जाता है और चावल के पाऊडर को फर्श पर पूर्व निर्धारित आकृति के अनुसार गिरने दिया जाता है।
- यह आवश्यक है कि चावल का पाऊडर लगातार बिना किसी रूकावट के गिरता रहना चाहिए।
- **'कोलम'** गृहणियों के द्वारा बनाए जाते हैं और यह कलाकार की स्वतंत्र हाथ से रचना करने के कौशल को दर्शाते हैं। युवा लड़कियां अपनी माँ, दादी, नानी से यह कला सीखती हैं।

स्व-मूल्यांकन

4.1.1 **कोलम** चित्रकारी में मुख्य डिजायन और मोटिफ के बारे में विशेष रूप से बताइए।

4.1.2 देश में फर्श पर सजावट के कुछ प्रसिद्ध नमूनों के बारे में बताइए।

4.1.3 **कोलम** किस का प्रतीक माना जाता है।

उत्तर

4.1.1 फलों एवं ज्यामितीय रूप।

4.1.2 **अल्पना, रंगोली, कोलम, सांझी** आदि।

4.1.3 भाग्य और समृद्धि का प्रतीक।

4.2

फुलकारी

विवरण

शीर्षक : चादर

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : कपड़ों की कढ़ाई रंगीन धागों से

काल : समकालीन

फुलकारी की विशेषतायें

- **फुलकारी** का वास्तविक अर्थ फूलों का काम है।
- यह एक प्रकार की कढ़ाई है जिसे बंगाल की लोक महिलाएँ करती हैं।
- **फुलकारी** की परिकल्पना मूल रूप से पारंम्परिक ज्यामितीय आकार की होती है।
- तारों के आकार को सुनहरे पीले तथा सफेद रंग के धागों से लाल कपड़े पर काढ़ा जाता है।
- **मुख्य मोटिफ** में एक बड़े सितारे के चारों ओर छोटे सितारे विभिन्न रूप में काढ़े जाते हैं।
- **मूल मोटिफ**, ज्यामितीय, चौकोर और त्रिकोणीय होते हैं।

फुलकारी के बारे में अपनी समझ विकसित करें

- महिलाएँ पहले अलग-अलग हिस्सों की बाहरी रूपरेखा को सूई से ऊभारती हैं और फिर एक निकटवर्ती दूसरे हिस्से को विरोधी रंगों से भरती हैं।
- उर्ध्वाकार (खड़ा हुआ) तथा क्षैतिज (समतल) धागों के कारण बहुत सुन्दर एवं आकर्षक नमूने बनते हैं।
- कलाकर साधारण **मोटिफ** के साथ-साथ विस्तृत **मोटिफ** का भी प्रयोग करते हैं।

स्व-मूल्यांकन

4.2.1 दर्शाई गई **फुलकारी** चित्र में कलाकार द्वारा किस प्रकार के आकार प्रयोग किए गए हैं।

4.2.2 दर्शाई गई **फुलकारी** में मूल प्रारूप (मोटिफ) में क्या दर्शाया गया है।

4.2.3 **फुलकारी** में कलाकार ने कौन-से माध्यम का प्रयोग किया है।

उत्तर

4.2.1 ज्यामितीय आकार।

4.2.2 एक बड़े सितारे के चारों ओर छोटे सितारे।

4.2.3 कपड़े पर कढ़ाई रंगीन धागों से।

4.3

कान्था

विवरण

शीर्षक : बंगाली कान्था

माध्यम : रेशमी कपड़े पर रंगीन धागों से कढ़ाई

समय : समकालीन

शिल्पकार : अज्ञात

कान्था की विशेषतायें

- सूचीबद्ध **कान्था** एक प्रकार की साड़ी है जो एक विशिष्ट पारम्परिक शैली व तकनीक से सिली होती है।
- इनके **मोटिफ** विभिन्न प्रकार के पशु व मानवी आकार के रूप होते हैं।
- साड़ी के गुलाबी रंग के आधार को विभिन्न रंगों के धागे से चैन स्टिच (शृंखला बद्ध कढ़ाई) पद्धति से कढ़ाई की जाती है।
- राजा जैसा दिखने वाला व्यक्ति घोड़े पर बैठा है और उसके सिर पर छाता जैसा लगा है।
- इस **मोटिफ** में **कालीघाट पटचित्र** का प्रभाव बहुत स्पष्ट है।

कान्था के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- बंगाल में कढ़ाई और रजाई में अत्यंत मनमोहक कढ़ाई की लोकप्रथा का नाम **कान्था** है। प्रयोग न की जाने वाली पुरानी साड़ी व धोतियों पर **कान्था** बनाई जाती है। बंगाल में सभी श्रेणी की महिलाएं यह कार्य करती हैं।
- **कांथाओं** के मोटिफ और डिजाइन ग्रामीण प्राकृतिक दृश्यों, कर्मकाण्डीय और धार्मिक क्रियाओं, नित्य प्रयोग में आने वाली वस्तुओं, ग्रामीण त्यौहार, सरकस, एवं अन्य मनोरंजन प्रदान करने वाले खेल कूद तथा ऐतिहासिक हस्तियों के चित्रों से लिये जाते हैं।
- इन **कांथाओं** के मोटिफ ये स्पष्ट करते हैं कि इसके कलाकारों में अपने आस-पास की वस्तुओं को गौर से देखने की निरीक्षण शक्ति होती है।

स्व-मूल्यांकन

4.3.1 दिये गए **कान्था** साड़ी में प्रयोग किए गए मोटिफ के बारे में बताइये?

4.3.2 सूचीबद्ध **कान्था** में घोड़े के ऊपर बैठी हुई आकृति को पहचानिए?

4.3.3 कौन-से कलाकार **कान्था** कढ़ाई करते हैं।

उत्तर

4.3.1 विभिन्न प्रकार के पशु एवं मानव आकृति।

4.3.2 राजा जैसा दिखने वाली आकृति ।

4.3.3 लोक कलाकार।

क्या आप जानते हैं?

- कुछ प्रसिद्ध लोक कलाओं के नाम-**कलमकारी, कोलम, मधुबनी, कालीघाट** (पटचित्र), **फूलकारी, कान्था**।
- फर्श पर किए जाने वाले **कोलम** तथा कपड़ों पर कढ़ाई किये जाने वाले **कान्था** एवं **फुलकारी।**
- **मधुबनी, कालीघाट पटचित्र, कोलम** प्रसिद्ध चित्र शैलियां हैं।
- लोककलाकार पीढ़ी दर पीढ़ी समान **मोटिफ** एवं डिजाइन का प्रयोग करते हैं।

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
5	पुनर्जागरण (नवजागरण)	2

संक्षिप्त भूमिका

- **रिनैसेंस** (Renaissance) का अर्थ **पुनर्जीवन** या **पुनजार्गरण** है। यह 14वीं शती से 17वीं शती तक यूरोप की प्रतिष्ठित पारम्परिक संस्कृति का **पुनर्जागरण** था।
- कला के संदर्भ में **लियोनार्डो डा विन्ची, माइकल एन्जलों** तथा **रैफेल** जैसे प्रसिद्ध कलाकारों के विशेष योगदान से इस युग में कला का विकास हुआ।

5.1

वीनस का जन्म

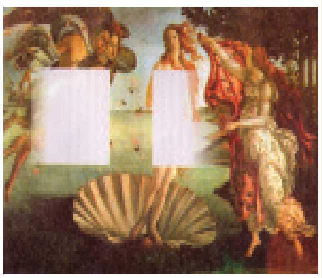

विवरण

शीर्षक : वीनस का जन्म

कलाकार : सैंड्रो बोतिचेल्ली (Sandro Bothicelli)

माध्यम : केन्वस पर टैम्परा

शैली : पुनर्जागरण काल

काल : 1485-1486

संकलन : फ्लोरेंस में गैलेरिया देगली उफीजी (Galleria degli Uffizi in Florence)

चित्र की विशेषतायें

- प्रारम्भिक पुनर्जागरण के कलाकार **बोतिचेल्ली** द्वारा चित्रित।
- इसमें **वीनस** को समुद्र से उभरते हुए दर्शाया गया है।
- यह चित्र **सौंदर्य** व **सत्य** का प्रतीक है।
- **वीनस** के शरीर की आकृति लंबी है।
- इसके अंग पतले और लंबे हैं।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- सैन्द्रो बोतिचेल्ली फ्लोरेन्टीन स्कूल की शैली अपनाने वाले इतालवी कलाकार थे।
- इन्होंने दूसरी शती के महान प्राचीन यूनानी (ग्रीक) कलाकारों की श्रेष्ठतम कृतियों से प्रेरणा ली।

स्व-मूल्यांकन

5.1.1 **वीनस** के शरीर की आकृति कैसी है?

5.1.2 चित्र में **वीनस** किसका प्रतीक है?

उत्तर

5.1.1 लंबी

5.1.2 सौंदर्य एवं सत्य

5.2

मोनालिसा

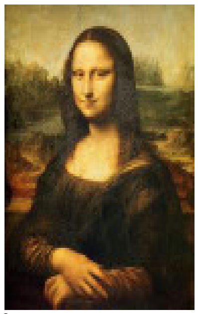

विवरण

शीर्षक : मोनालिसा

कलाकार : लियोनार्डो डा विन्ची

माध्यम : (पोपलर वृक्ष) पहाड़ी लकड़ी पर तैलीय रंग

शैली : पुनर्जागरण कालीन

काल : 16वीं शताब्दी

संकलन : लूव्र संग्रहालय, पेरिस (Louvre Museum, Paris)

चित्र की विशेषतायें

- यह चित्र उच्च **पुनर्जागरण काल** की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है जिसे **लियोनार्डो डा विन्ची** ने बनाया है।
- होठों की रहस्यात्मक मुस्कराहट कला प्रेमियों को मुग्ध करती है।
- प्रकाश और छाया के प्रयोग में नाटकीय विषमता है तथा यह मनुष्य और प्रकृति के रहस्य को उजागर करती है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **उच्च पुनर्जागरण काल** के इतालवी चित्रकार **लियोनार्डो डा विन्ची** बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे।
- वे एक मूर्तिकार के साथ-साथ प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी थे।
- उनके अन्य प्रसिद्ध चित्रों में **'लास्ट सपर'** तथा **'वर्जिन ऑफ रॉक'** के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्व-मूल्यांकन

5.2.1 **'मोनालिसा'** के अंतर्गत **विन्ची** द्वारा रहस्य को किस प्रकार उजागर किया गया है?

5.2.2 चित्र के माध्यम का उल्लेख करें।

उत्तर

5.2.1 प्रकाश और छाया के प्रयोग में नाटकीय विषमता से **'मोनालिसा'** चित्र में रहस्य उजागर किया गया है।

5.2.2 **'मोनालिसा'** का माध्यम पहाड़ी लकड़ी पर तैलीय रंग है।

5.3

पीएता

विवरण

शीर्षक : पीएता

कलाकार : माइकल एन्जेलो

माध्यम : संगमरमर मूर्ति

शैली : पुनर्जागरण काल

काल : 1498–1499 ई0

संकलन : सेंट पीटर (St. Peter), रोम

मूर्ति की विशेषतायें

- पुनर्जागरण कलाकार **माइकल एन्जेलो** की प्रसिद्ध कृति।
- इसमें **कुमारी मैरी** की गोद में निर्जीव **यीशु** के शरीर को दिखाया गया है।
- यह कलाकृति सौन्दर्य के प्रतिष्ठित आदर्शो तथा कलाकार की अपनी सृजानात्मक अभिव्यक्ति की संतुलित व्याख्या है।

इस मूर्ति के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **माइकल एन्जेलो** न केवल उच्च पुनर्जागरण काल के उत्कृष्टतम मूर्तिकार थे, अपितु सर्वाधिक प्रसिद्ध भित्ति-चित्र निर्माता भी थे।
- उन्होंने बाईबल से विषय लेकर **सिस्टाइन चर्च** की छतों और दीवारों पर चित्र बनाये।

स्व-मूल्यांकन

5.3.1 **पीएता** का विषय क्या है?

5.3.2 इस कृति में मूर्तिकार द्वारा किसकी संतुलित व्याख्या है?

उत्तर

5.3.1 इसमें **कुमारी मैरी** की गोद में निर्जीव **यीशु** के शरीर को दिखाया गया है।

5.3.2 इस कृति में सौन्दर्य के प्रतिष्ठित आदर्शो तथा कलाकार की अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति की संतुलित व्याख्या है।

5.4

दि नाइट वाच

विवरण

शीर्षक : दि नाइट वाच

कलाकार : रेमब्रां (Rembrandt)

माध्यम : कैन्वास पर तैलीय रंग

शैली : पुनर्जागरण (बैरोक)

काल : 1642 ई०

संकलन : हॉलैण्ड एम्सटरडम में जिक्स संग्रहालय

मूर्ति की विशेषतायें

- रेमब्रां की कृति 'दि नाइट वाच' संसार की उत्तम कृतियों में से एक ह।
- इसमें प्रकाश और छाया का प्रभावशाली प्रयोग हुआ है।
- रंगों का प्रतीकात्मक प्रयोग हुआ है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- 17वीं शताब्दी के डच चित्रकार थे।
- वे एक यथार्थवादी चित्रकार थे, जो रंग के गहरे प्रयोग में निपुण थे।

स्व-मूल्यांकन

5.4.1चित्र में प्रयुक्त माध्यम का उल्लेख करें।

5.4.2 **रेम्ब्रां** की उत्तम कृति का उल्लेख करें।

उत्तर

5.4.1 कैन्वास पर तैलीय रंग।

5.4.2 **दि नाइट वॉच।**

क्या आप जानते हैं?

- पुनजार्गरण का प्रसार **प्राथमिक पुनर्जागरण** से **उच्च्य पुनर्जागरण** तथा अंत में **बैरोक काल** के रूप में हुआ।
- शारीरिक संरचना, परिदृश्य की सम्पूर्णता तथा संक्षिप्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया गया।
- कुछ प्रसिद्ध कलाकारों के नाम हैं- **बोतिचेल्ली, लियोनार्डो-डा-विन्ची, रैफेल, माइकल एन्जेलो, रेम्ब्रां** तथा **रूबेन।**

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
6	प्रभाववाद	2

संक्षिप्त भूमिका

- **प्रभाववाद** कला का एक आंदोलन था जिसने प्रतिदिन के जीवन की सादगी और सरलता से प्रेरणा ली। इन कलाकारों ने वस्तुओं पर प्रकाश के प्रभाव के संबंध को दिखाया। कुछ चित्रकारों ने खुले में चित्रण कर रंगों और प्रकाश के प्रभाव को पकड़ने का प्रयास किया। **उत्तर प्रभाववादी** चित्रकारों ने उनका अनुसरण करते हुए "आंतरिक भावों के प्रकटीकरण" (Expression) को अधिक महत्व दिया।

6.1

वाटर लिलिज

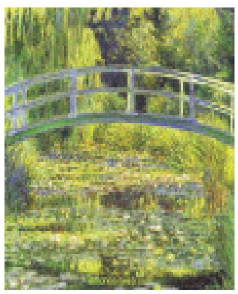

विवरण

शीर्षक : वाटर लिलिज
कलाकार : क्लॉड मॉने (Claude Monet)
माध्यम : तैलीय रंग
शैली : प्रभाववाद
काल : 1899
संकलन : नेशनल गैलरी, लंदन

चित्र की विशेषतायें

- **मॉने** के एक चित्र के नाम पर इसे **प्रभाववाद** का नाम दिया गया। प्रस्तुत चित्र में तालाब के उस पार जापानी पुल का चित्रण किया गया है।
- आसमान को चमकीले रंगों में प्रभावी रूप से असाधारण गहराई के साथ प्रतिबिंबित किया गया है।
- खिलते हुए विभिन्न आकार के लिलि फूलों से चित्र के सौंदर्य में वृद्धि हुई है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **मॉने प्रभाववादी** के पुरोगामी कलाकार थे।
- वह प्रभाववादी समूह के अग्रगामी मार्गदर्शक थे।
- **मॉने** एक समर्पित कलाकार थे। उन्हें आकर्षक एवं मुग्धकारी फूलों में प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण के लिए बड़ी श्रद्धा से याद किया जाता है।

स्व-मूल्यांकन

6.1.1 उस चित्रकार का नाम बताइए जिसने **वाटर लिलि** चित्र बनाया है।

6.1.2 **मॉने** ने अपने चित्रों में किस शैली का प्रयोग किया है।

उत्तर

6.1.1 क्लॉड मॉने

6.1.2 प्रभाववाद

6.2

डांस क्लास

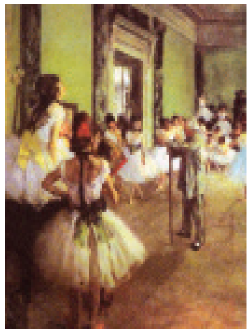

विवरण

शीर्षक : डांस क्लास

कलाकार : ऐडगर डेगा

माध्यम : कैन्वास पर तैलीय रंग

शैली : प्रभाववाद

काल : 1873-1876

संकलन : म्युजियम ऑफ आर्ट, टोलेडो, ओहियो (यू.एस.ए)

चित्र की विशेषतायें

- इसमें नृत्यांगनाओं की लयात्मक गति साफ दिखाई देती है।
- इस चित्र में जिंदगी का पूरा दृश्य जैसे प्रस्तुत किया गया है।
- अप्राकृतिक प्रकाश का प्रयोग देखने योग्य है।

कलाकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- पेरिस में जन्मे फ्रांसीसी कलाकार **ऐडगर डेगा** ने **नृत्य कक्षा** नामक चित्र को 1834 में बनाया।
- उनकी मुख्य रूचि मानवीय उपस्थिति में थी जिनमें बैले (नृत्य नाटकों) की नृत्यांगनाएं झालरदार घाघरे (स्कर्ट) में नृत्य करने के लिये तैयारी करती दिखाई देती हैं जिससे चित्र में गति प्रदर्शित होती है।
- उनके अत्यंत प्रिय माध्यम तैलीय पेस्टल रंग थे।
- उन्होंने बहुत-सी मूर्तियां भी बनाईं।

स्व-मूल्यांकन

6.2.1 **डेगा** अन्य प्रभाववादी कलाकारों से कैसे भिन्न है?

6.2.2 उन्होंने रंगों के किस माध्यम को वरीयता दी?

उत्तर

6.2.1 प्रकृति चित्रण के विपरीत।

6.2.2 तैलीय पेस्टल

6.3
स्टारी नाइट

विवरण

शैली : उत्तर प्रभाववाद
कलाकार : विनसैट वैन गॉग
माध्यम : तैलीय रंग
काल : 1889
संकलन : नैशनल गैलरी, लंदन

मूर्ति की विशेषतायें

- **विनसैट वेन गॉग** की यह एक उत्कृष्ट कृति है।
- इस चित्र में रगों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- चित्र में सादा आकाश सितारों से भरा दिखाया गया है।
- उनके चित्र वास्तविक न होते हुए अत्यंत प्रतीकात्मक है।

कलाकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- हालैन्ड में पैदा हुए उनका जीवन गरीबी और मुसीबतों से भरा हुआ था। उस के बावजूद भी वह एक समर्पित कलाकार थे।
- निराशा और हताशा के कारण उन्होंने आत्महत्या की।

स्व-मूल्यांकन

6.3.1 अपने चित्रों में **वैन गॉग** ने किस शैली का प्रयोग किया।

6.3.2 उन्होंने किस माध्यम से अपने चित्र बनाए।

6.3.3 **स्टारी नाईट** चित्र से क्या आभास होता है।

उत्तर

6.3.1 उत्तर प्रभाववाद

6.3.2 तैलीय रंग

6.3.3 प्रकृति चित्रण-आकाश गंगा के तारे भंवर में घूमते प्रतीत होते हैं।

क्या आप जानते हैं?

मॉने के एक चित्र के ऊपर **प्रभाववाद** का नाम दिया गया।

ऐडगर डेगा ने बैलेर नृत्यों के चित्रों की एक श्रृखंला बनाई।

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
7	घनवाद, अतियथार्थवाद तथा अमूर्तकला	2

संक्षिप्त भूमिका

- **20वीं शताब्दी** के प्रारंभ में बहुत-सी शैली एवं कला के सिद्धान्तों का प्रादुर्भाव हुआ। जैसे **घनवाद**, **अतियथार्थवाद** तथा **अमूर्तकला** आदि। **पिकासो** ने **घनवाद** का निर्माण किया व **सल्वाडॉर डाली** ने **अतियथार्थवाद** को आकार दिया। **काण्डैस्की** एवं **मॉन्ड्रियन** ने **अमूर्तकला** की शुरूआत की।

7.1

मैन विद वायलिन

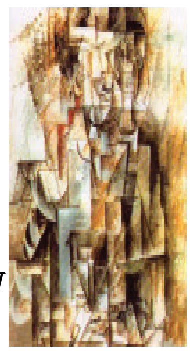

विवरण

शीर्षक : मैन विद वायलिन
कलाकार : पब्लो पिकासो
माध्यम : कैनवास पर तैलीय रंग
काल : 1912
आकार : 100 × 73 से.मी.
संकलन : कला फिलाडैलफिया का संग्रहालय

चित्र की विशेषतायें

- यह चित्र घनवाद के विश्लेषणात्मक अध्ययन का अच्छा उदाहरण है।
- **मैन विद वायलिन** को विभिन्न हिस्सों में बाँट दिया गया एवं एक ही समय में चित्र में अन्य विचारों को भी दर्शाया गया है।
- मानवकृति जो हाथ में वायलिन पकड़े हुए है उसे विभिन्न ज्यामितीय आकारों में परिवर्तित कर दिया गया है और फिर टुकड़ों में इकट्ठा किया गया है।
- भूरे तथा हरे रंगों का मिश्रण एवं रंगत इस चित्र में देखते ही बनती है।
- यह घनवाद का द्वितीय चरण है।

कलाकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **पिकासो** विश्व के सर्वश्रेष्ठ आधुनिक चित्रकार थे।
- उनके उत्थान व विकास का चरण **नीले काल**, **गुलाबी काल** एवं **घनवाद** तक चला।
- **पिकासो** ने हर प्रकार की कला जैसे **मूर्तिकला**, **सिरामिक** डिजाइन की रचना की।

स्व-मूल्यांकन

7.1.1 **पिकासो** के किन्हीं दो महत्वपूर्ण **समय काल** के बारे में लिखें।

7.1.2 विश्लेषणात्मक घनवाद क्या है?

उत्तर

7.1.1 **नीला काल** और **गुलाबी काल**

7.1.2 वस्तुओं को विश्लेषणत्मक अध्ययन के बाद संयोजित करना।

7.2

परसिस्टैंस ऑफ मैमोरी

विवरण

शीर्षक : परसिस्टैंस ऑफ मैमोरी

कलाकार : सल्वाडौर डाली

माध्यम : कैनवास पर तैलीय रंग

काल : 1931

आकार : 9½ × 13 इंच

संकलन : म्युजियम ऑफ मॉडर्न आर्ट, न्यूयार्क

चित्र की विशेषतायें

- **सल्वाडौर डाली** के सबसे प्रसिद्ध अतियथार्थवादी चित्रों में से एक है।
- विभिन्न वस्तुओं को पथरीले समुद्र तट पर दर्शाया गया है।
- चित्र में वास्तविकता होते हुए भी वास्तविकता से परे सब दिखाई देता है।
- आकृतियाँ अशान्त तथा विक्षुब्ध मन को दर्शाती हैं।

कलाकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- सुप्रसिद्ध अतियथार्थवादी चित्रकार।
- वे लेखक तथा फिल्मकार भी थे।
- वे शास्त्रीय शैली में कुशलता प्राप्त कर चुके थे।
- उनका थियेटर संबंधी सनकी व्यवहार भी उतना ही विशिष्ट है जितनी उनकी चित्रकला।

स्व-मूल्यांकन

7.2.1 दिये गए चित्र में कौन-से आकार दर्शाये गए हैं।

7.2.2 सल्वाडॉर डाली के बारे में क्या जानते हैं, लिखिए।

उत्तर

7.2.1 घड़ियां, पेड़, कीड़े मकौड़े।

7.2.2 वह एक यथार्थवादी चित्रकार, फिल्मनिर्माता और लेखक थे।

7.3

ब्लैक लाइन्स

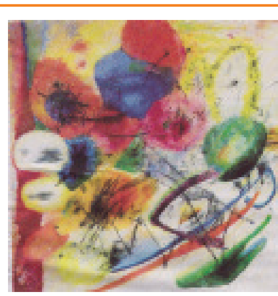

विवरण

शीर्षक : ब्लैक लाइन्स

समय : दिसंबर 1913

कलाकार : वैसिली काडिंस्की

माध्यम : कैनवास पर तैलीय रंग

आकार : 4.3 × 3¼ ईंच

संकलन : सोलोमन आर गुगिन्हम म्युजियम, न्यूयार्क

चित्र की विशेषतायें

- **कान्डिस्की** अपने समय के प्रसिद्ध अर्मूत चित्रकार थे।
- दिये गए चित्र में उन्होंने काली रेखाओं एवं रगों के धब्बों के द्वारा चित्र को संयोजित किया।
- आकृतियाँ किसी भी वास्तविकता को नहीं दर्शाती।
- यह चित्र केवल अमूर्तकला एवं ज्यामितीय आकार का समिश्रण है, इसीलिए यह एक अमूर्त चित्र है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **काण्डिस्की** का जन्म रूस में हुआ था और उन्होंने अपनी कला का अभ्यास जर्मनी एवं पेरिस में किया।
- **काण्डिस्की** अमूर्तकला के जन्मदाता माने जाते हैं।
- वे संगीत की तरह चित्र को अर्मूत चाहते थे। वह एक प्रसिद्ध कला सिद्धान्तवादी थे।

स्व-मूल्यांकन

7.3.1 **काण्डिस्की** का आधुनिक चित्रकला में क्या मुख्य योगदान रहा, बताइये।

7.3.2 दिये गए चित्र का माध्यम एवं समय काल बताइये।

उत्तर

7.3.1 काण्डिस्की अर्मूत कला के जन्मदाता माने जाते हैं। वो अपने कार्य के द्वारा अपनी आने वाली पीढ़ी के कलाकारों के लिए प्रेरणास्त्रोत बने।

7.3.2 **ब्लैक लाइन्स चित्र काण्डस्की** द्वारा कैनवास पर तैलीय रंग से 1913 में बनाई गई थी।

क्या आप जानते हैं?

- **सेजां** को **घनवाद** का पुरोगामी माना जाता है।
- **दादवादी** (Dadaist) विद्रोह के फलस्वरूप अतियथार्थवाद का जन्म हुआ।
- **पिकासो** की उत्तम कृति गुयेर्निका में स्पेन के गृह-युद्ध को दर्शाया गया है।

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
8	समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार	3

संक्षिप्त भूमिका

- 19वीं शती के प्रारंभ में ब्रिटिश शासन के प्रभाव के कारण भारतीय पारम्परिक कला का ह्रास शुरू हुआ।
- भारतीय कलाकारों ने अपनी पैतृक कला को सकारात्मक सोच से देखना शुरू किया तथा यूरोपियन पूर्व ब्रिटिश शासन काल की कला से आगे बढ़ने का प्रयास किया।
- समकालीन भारतीय कला के प्रसिद्ध कलाकार :
    - **राजा रवि वर्मा**
    - **अवनींद्र नाथ टैगोर**
    - **नन्दलाल बोस**
    - **विनोद बिहारी**
    - **रवीन्द्र नाथ टैगोर**
    - **जामिनी राय**
    - **अमृता शेरगिल**

8.1

हंस दमयन्ती

विवरण

शीर्षक : हंस दमयन्ती
कलाकार : राजा रवि वर्मा
माध्यम : कैनवास पर तैलीय रंग
काल : 1899
संकलन : राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली

चित्र की विशेषतायें

- 1899 में तैलीय रंग में बनाई गई यह कृति **राजा रवि वर्मा** की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृतियों में से एक है।
- चित्र में दमयन्ती को सबसे सुन्दर स्त्री के रूप में लाल रंग की साड़ी पहने चित्रित किया गया है तथा वह अपने प्रेमी का संदेश हंस के माध्यम से सुन रही है।
- दमयन्ती की खड़ी आकृति और उसकी अर्थगर्भित **भाव-भंगिमा** बहुत आकर्षक है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- ये भारत के सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त कलाकारों में से हैं जिनका क्रांतिकारी दृष्टिकोण था।
- पानी तथा तैलीय रंगों की अपनी तकनीक के लिये उन्हें खूब ख्याति प्राप्त हुई।
- इनकी कृतियों में भारतीय पौराणिक कथा शृंखला अंकित है।
- **दुष्यन्त-शकुन्तला, नल-दमयन्ती** तथा **महाभारत** महाकाव्य की कथाओं से लिए गए प्रसंग इनकी कलाकृतियों में विशेष स्थान रखते हैं।

स्व-मूल्यांकन

8.1.1 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में किस के प्रभाव के कारण भारतीय कला का सामान्य रूप से पतन शुरू हो गया था।

8.1.2 **राजा रवि वर्मा** द्वारा चित्रित **"हंस दमयन्ती"** में कौन-से माध्यम का प्रयोग किया गया है।

उत्तर

8.1.1 ब्रिटिश शासन।

8.1.2 कैनवास पर तैलीय रंग।

8.2

ब्रह्मचारी

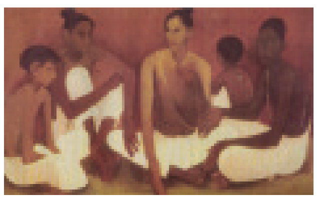

विवरण

शीर्षक : ब्रह्मचारी

कलाकार : अमृता शेरगिल

माध्यम : कैनवास पर तैलीय रंग

काल : 1938

संकलन : राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय नई दिल्ली

चित्र की विशेषतायें

- यह चित्र-परम्परावादी दक्षिण भारत में अभी भी प्रचलित हिन्दू प्रथाओं तथा विश्वास एवं आस्था की समझ का एक सुन्दर उदाहरण है।
- एक आश्रम में पांच पुरूष ब्रह्मचारियों को हिन्दू आस्था पर श्रद्धा के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।
- रंगों की विविधता पर विशेष महत्व दिया गया है जैसे गहरे लाल रंग की पृष्ठभूमि में सफेद धोती।
- इस चित्र को समतल धरातल पर सीधे खड़े रूप में चित्रित किया गया है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **20वीं शताब्दी** में भारत में समकालीन कला क्षेत्र के इतिहास में इनकी उपस्थिति एक महान घटना मानी जाती है।
- दक्षिण भारत के दौरे से उन्होंने बड़ी प्रेरणा प्राप्त की जिसके फस्वरूप उन्होंने **'दुल्हन का श्रृंगार' 'ब्रह्मचारी'** तथा **'बाजार जाते हुए दक्षिण भारतीय ग्रामीण'** नामक चित्रों की रचना की।
- जिस मनोयोग से उन्होंने अपनी प्रतिभा, रंग तथा ब्रश का प्रयोग किया तथा पश्चिम में अपने प्रशिक्षण तथा पूर्व के विचारों का सामंजस्य किया, उसे उन्होंने बहुत लोकप्रिय बनाया। उनके चित्र उनका देश एवं वहाँ के लोगों के जीवन के प्रति प्रेम दर्शाते हैं।

स्व-मूल्यांकन

8.2.1 देश के किस भाग ने **अमृता शेरगिल** को उनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ बनाने के लिये प्रेरित किया?

8.2.2 चित्र में **ब्रह्मचारी** किस आस्था पर पूर्ण श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं?

उत्तर

8.2.1 दक्षिण भारत

8.2.2 हिन्दू आस्था

8.3
दि आट्रियम

विवरण

शीर्षक : दि आट्रियम
कलाकार : गगनेन्द्र नाथ टैगौर
माध्यम : कागज पर जल रंग
काल : 1920
आकार : 12.5 × 9.5 इंच
संकलन : रवीन्द्र भारती सोसाइटी जोरासांको, कोलकाता

चित्र की विशेषतायें

- यह चित्र एक आसाधारण कलाकृति है जो उनकी कृतियों पर घनवाद के प्रभाव को दर्शाती है।
- घनवाद एक ऐसी शैली है जिसमें वर्णित वस्तुओं को ज्यामितीय आकार में प्रस्तुत किया जाता है।
- इस चित्र में रंगों के माध्यम से प्रकाश एवं छाया के अपूर्व संयोजन के प्रयोग से हुए प्रभाव को दर्शाया गया है।
- विभिन्न ज्यामितीय आकारों को संयोजित करके इस आकृति को रूप दिया गया है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- 1910 से 1921 के अन्तर्गत उनकी कृतियों में हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं के चित्र एवं कला-क्रम में चैतन्य की जीवन गाथा प्रमुख है।
- अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में उन्होंने स्पष्ट रूप से घनवाद को अपनी एक शैली बना लिया जिसका मूल उद्देश्य अभिव्यक्ति को गूढ़ ज्यामितीय आकारों के माध्यम से व्यक्त करना था।
- वह अपने समय के महान कला समीक्षक भी रहे तथा उनके राजनैतिक तथा सामाजिक व्यंग्य चित्र भी बहुत चर्चित थे।

स्व-मूल्यांकन

8.3.1 **"द आट्रियम"** चित्र किस माध्यम में बना है।

8.3.2 **गगनेंद्रनाथ टैगोर** द्वारा विकसित शैली के नाम के बारे में बताइये।

उत्तर

8.3.1 कागज पर जल रंग।

8.3.2 घनवाद

क्या आप जानते हैं?

- आधुनिक भारतीय कला, हमारे देश के इतिहास एवं सामाजिक परिस्थितियों के साथ जुड़ी हुई है।
- ब्रिटिश समय में कम्पनी स्कूल के अंतर्गत कई महत्वपूर्ण कलाकृतियां निर्मित हुई।
- शान्ति निकेतन में स्थापित बंगाल स्कूल कला के उत्थान का केन्द्र बना।
- भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि के कलाकारों ने एकत्रित होकर भारतीय कला को एक नया आयाम दिया।
- बंगाल स्कूल समकालीन भारतीय कला आन्दोलन में एक मुख्य कड़ी के रूप में स्पष्ट हुआ।

पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
9	समकालीन भारतीय कला	3

संक्षिप्त भूमिका

- मुगल साम्राज्य के पतन तथा प्राचीन एवं मध्ययुगीन कला की समाप्ति के बाद भारत में ब्रिटिश राज के साथ समकालीन भारतीय कला प्रारंम्भ हुई।
- **जर्मन अभिव्यक्तिवाद, घनवाद, अतियथार्थवाद** ने इन भारतीय युवा कलाकारों की कला पर बहुत प्रभाव छोड़ा। इन कलाकारों में **राजा रवि वर्मा, अबनीद्रनाथ टैगोर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल** एवं **जॉमिनी राय** के नाम आते हैं।
- पाश्चात्य तकनीक तथा भारतीय अध्यात्मवाद का मेल भारतीय कला का मूलभाव रहा।
- एक तरफ कुछ कलाकार पाश्चात्य शैली के साथ कुछ प्रयोग कर रहे थे और दूसरी ओर कुछ कलाकार जैसे **बिनोद विहारी मुखर्जी, राम किंकर बेज** जापानी कला एवं लोककला की ओर अपना रूझान दिखा रहे थे।

9.1

वर्लपूल

विवरण

शीर्षक : वर्लपूल

कलाकार : कृष्णा रेड्डी

माध्यम : कागज पर उत्कीर्ण आकृति

काल : 1962

आकार : 37.5 सेमी॰

चित्र की विशेषतायें

- **वर्लपूल कृष्णा रेड्डी** की सबसे प्रसिद्ध कृति है।
- इसे उत्कीर्ण पद्धति से बनाया गया है।
- **वर्लपूल** कृति में कलाकार ने परिचित वस्तुओं के नए आकार बनाए हैं जो बाद में अर्मूत रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।
- चित्र के अनुसार सभी कुछ भवंर में खो जाता है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **कृष्णा रेड्डी** अपने समय के प्रसिद्ध चित्रमुद्रक माने जाते हैं।
- वह कला भवन, विश्वभारती तथा शान्ति निकेतन के विद्यार्थी रहे हैं।
- कृष्णा रेड्डी के मूर्तिकला के क्षेत्र के पूर्वानुभव से उभार किस्म उत्कीर्ण की आकृति के अर्थ एवं प्रभाव को समझने में सहायता मिली है जो उनकी इस कलाकृति का सौन्दर्य है।

स्व-मूल्यांकन

9.1.1 कृष्णा रेड्डी ने वर्लपूल चित्रमुद्रण में किस तकनीक का प्रयोग किया है?

9.1.2 कृष्णा रेड्डी के किस प्रकार के पूर्व अनुभवों से उत्कीर्ण आकृति में उनके सहायक सिद्ध हुए हैं?

उत्तर

9.1.1 उत्कीर्ण आकृति (कागज पर)

9.1.2 मूर्तिकला अनुभव

9.2

मैडीवल सेन्टस

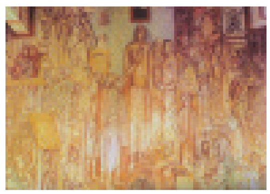

विवरण

शीर्षक : मैडीवल सेन्टस

काल : 1947

कलाकार : विनोद बिहारी मुखर्जी (1904-1980)

माध्यम : भित्ति चित्र (Fresco Buono)

संकलन : शांति निकेतन विश्वभारती के हिन्दी भवन की दीवार पर बना भित्ति चित्र

चित्र की विशेषतायें

- **मैडीवल सेन्ट्** शांति निकेतन विश्वभारती के हिन्दी भवन की दीवार पर बना भित्ति चित्र है।
- इसको बनाने में **फ्रेस्को बुओनो** (भित्ति चित्र) तकनीक का प्रयोग किया गया है जिसमें विभिन्न धर्मो के सन्तों को दर्शाया गया है।
- आकृतियों की लम्बाई उनकी आध्यात्मिक महानता को दर्शाती है। छोटे आकार की आकृतियां सामान्य व्यक्तियों को दर्शाती हैं।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- **विनोद बिहारी** प्रसिद्ध बंगाल स्कूल के चित्रकार **नन्द लाल बोस** के शिष्य थे।
- उन्हें प्रकृति और उसकी सुन्दरता से बहुत प्रेम था।
- उन्होंने प्रकृति चित्रण की कला जापान से सीखी।
- जापानी कलाकारों की तरह उन्होंने भी सरल व तर्कसंगत रेखाओं का प्रयोग किया।
- उनकी आँखें बचपन से ही कमजोर थीं। जीवन के अंतिम समय में वह बिल्कुल ही नेत्रहीन हो गए।

स्व-मूल्यांकन

9.2.1 **मैडिवल सैन्टस्** में किन आकृतियों को दर्शाया गया है।

9.2.2 प्रकृति चित्रण कला विनोद बिहारी मुखर्जी ने कहाँ से सीखी।

उत्तर

9.2.1 विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के सन्तों के चित्र दर्शाये गए हैं।

9.2.2 जापान।

9.3

वर्ड्स एवं सिंबल्स

विवरण

शीर्षक : वर्ड्स एवं सिंबल्स

कलाकार : के. सी. एस. पनिकर (1911-1977)

माध्यम : लकड़ी के बोर्ड पर तैलीय रंग

काल : 1965

आकार : 43 सेमी॰ × 124 सेमी॰

चित्र की विशेषतायें

- **के. सी. एस. पनिकर** के **शब्द और प्रतीक** चित्रों की श्रृंखला का यह एक प्रसिद्ध चित्र है।
- इस चित्र में स्थान को सुलेख से भरा गया है।
- गणित के चिन्हों, अरबी आकृतियों तथा रोमन एवं मलयालम लिपि के प्रयोग से आकृतियां बनाई गई है।
- यह आकृतियाँ देखने में जन्मपत्रिका जैसी लगती हैं। तांत्रिक प्रतीकात्मक रेखा-लेखों को प्रयोग भी किया गया है।

कलाकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- वह दक्षिण भारत में समकालीन कला आन्दोलन के प्रेणता के रूप में जाने जाते हैं।
- **मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट** में बंगाल की विचारधारा के गुरु **डी.पी. राय चौधरी** के शिष्य थे।
- उनकी शैली यथार्थवाद से लेकर ज्यामितीय तक पहुँची।
- उन्होने चैन्नई के पास **"श्री चौलामण्डलम्"** नामक भारत के प्रथम कला-ग्राम की स्थापना की।

स्व-मूल्यांकन

9.3.1 **के. सी. एस. पनिकर** ने अपने प्रारूप में किन प्रतीक चिह्नों, आकृतियों और सुलेख का उपयोग किया?

9.3.2 **के. सी. एस. पनिकर** के चित्रों में रंगों की विशेषताओं की पहचान कीजिए?

9.3.3 **के. सी. एस. पनिकर** द्वारा स्थापित प्रथम कलाग्राम का नाम बताएं?

उत्तर

9.3.1 गणित के चिह्न, अरबी आकृतियाँ, रोमन एवं मलयालम लिपियां।

9.3.2 उनके चित्र में रंगों का महत्व बहुत कम देखने को मिलता है।

9.3.3 **चौलामण्डलम**

9.4

लैडस्केप इन रैड

विवरण

शीर्षक : लैडस्केप इन रैड

कलाकार : फ्रासिंस न्युटन सौजा (1924-2002)

माध्यम : तैलीय रंग

काल : 1961

संकलन : जहांगीर निकलसन संग्रहालय

चित्र की विशेषतायें

- यह एक शहरी दृश्य है जिसमें चित्रकार ने शहर जैसा रूप दिखाने का प्रयास किया जो मात्र पथरीले जंगल की भांति दिखता है।
- सुलेखीय रूप में रेखाओं को रंगों के साथ बहुत अच्छे तरीके से संयोजित किया गया है।
- इस चित्र में मुख्य रूप से लाल रंग का प्रयोग किया गया है तथापि इधर-उधर हरे रंग के छींटे भी डाले गए हैं।
- इस चित्र में किसी भी परिदृश्य के नियम को नहीं माना गया है।

चित्रकार के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- 1947 को **प्रगतिशील कलाकारों के ग्रुप** की स्थापना करने वाले सबसे युवा चित्रकार थे।
- अपने चित्रों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक तथा धर्मिक कुरीतियों का विरोध किया।
- वह **उत्तर प्रभाववादी** और **जर्मन अभिव्यक्तिवादी** कलाकारों से प्रेरित थे।
- विशेष रूप से **पिकासो** एवं **मतीसे** से अत्यधिक प्रभावित थे।

स्व-मूल्यांकन

9.4.1 **एफ. एन. सौजा** के चित्र **''लैण्डस्केप इन रैड''** में शहरी दृश्य को किस प्रकार दर्शाया गया है।

9.4.2 **एफ. एन. सौजा** किन-किन चित्रकारों से प्रेरित हुए।

उत्तर

9.4.1 पथरीले जंगल

9.4.2 पिकासो एवं मतीसे

क्या आप जानते हैं?

- भारत में ब्रिटिश शासन के साथ समकालीन कला का प्रारंम्भ हुआ।
- **राजा रवि वर्मा, अवनिन्द्रनाथ टैगौर, अमृता शेरगिल, रविन्द्र नाथ टैगोर** भारतीय समकालीन कला के पुरोगामी माने जाते है।
- ये **युवा कलाकार** पाश्चात्य कला आन्दोलन से स्पष्ट रूप से प्रभावित हुए।
- जर्मन अभिव्यक्तिवाद, घनवाद, भाववाद, दादवादी एवं अतियथार्थवाद से ये भारतीय चित्रकार बहुत ही प्रभावित रहे।
- ये भारतीय कलाकार भारतीयता एवं भारतीय आध्यात्मिकता को बचाए रखने के लिए अपना संघर्ष करते रहे।

प्रयोगात्मक

पाठ संख्या – 1 **वस्तु चित्रण**

प्रस्तावना

मनुष्य ने ऐसी बहुत सी वस्तुएं बनाई हैं जिनका हम दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। इनमें से कुछ वस्तुएं जैसे पुस्तकें, बर्तन आदि, हमें आसानी से प्राप्त हो जाती हैं। इन वस्तुओं को देखकर उनका वास्तविक चित्र बनाने को चित्रकला में **वस्तु चित्रण** कहते हैं।

प्रयोग में आने वाली सामग्री

1. ड्राईंग बोर्ड
2. ड्राईंग पेपर
3. ड्राईंग पिन
4. पैन्सिल एच बी (2बी, 4बी, 6बी)
5. रबड़
6. रंग
7. ब्रुश
8. कलर मिक्सिंग प्लेट
9. पुस्तक, बर्तन जैसी निर्जीव वस्तुएं

वस्तु चित्रण में याद रखने वाले प्रमुख तत्व

वस्तु चित्रण

- नाप व अनुपात
- परिदृष्टि
- छाया और प्रकाश
- रंग

नाप द्वारा अनुपात की अवधारणा

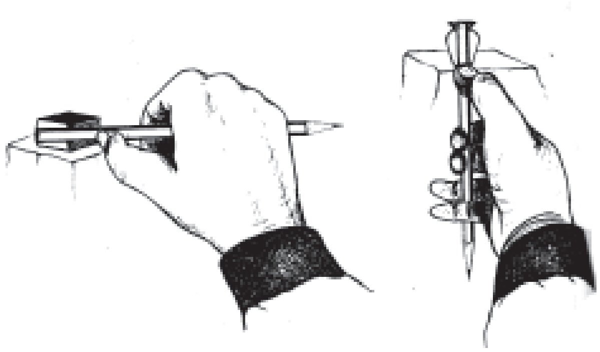

चित्र 1

- चित्र में दिखाए गए अनुसार अंगुलियों में पैंसिल को पकड़ें।
- प्रत्येक वस्तु के आकार के नाप का पैंसिल पर एक निशान निर्धारित करें।
- सीधा बैठें। एक आंख बंद करें, हाथ को कंधे की सीध में रख कर नाप लें।
- वस्तुओं के आकार की लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई के अनुपात के लिए अपने हाथ को लिटा कर या खड़ा कर उनका नाप लें।
- अपने पेपर (कागज) के अनुपात के अनुसार नाप अंकित करें।

परिदृष्टि के आधारभूत नियमों को जानिए

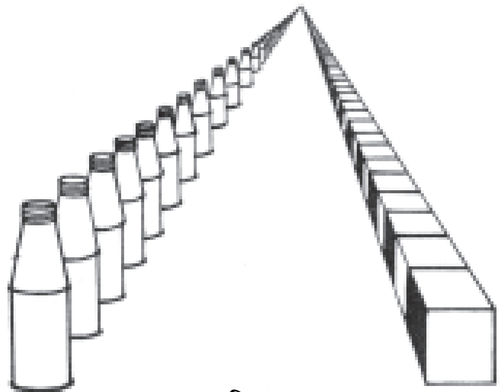

चित्र 2

- वस्तु चित्रण में परिदृष्टि एक अत्यंत आवश्यक तत्व है।
- वस्तुओं के आकार को छोटा या बड़ा करके उनकी दिशा और स्थिति को दर्शाया जा सकता है।
- कलाकार की ऊंचाई और वस्तु से दूरी के अनुसार क्षितिज रेखा को पेपर के ऊपर या नीचे दर्शाया जा सकता है।

छाया और प्रकाश के द्वारा आयतन दर्शाना

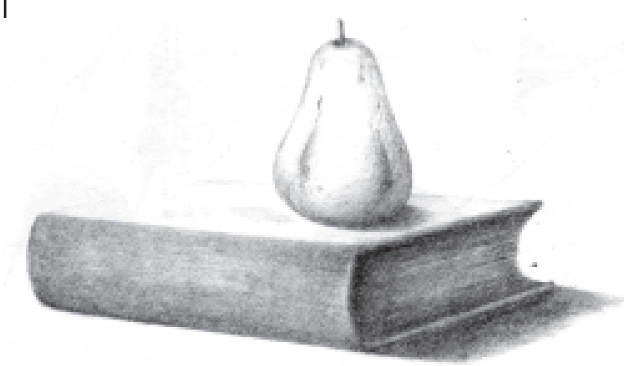

चित्र 3

- छाया और प्रकाश वस्तुओं के आयतन और वास्तविक रूप को दर्शाता है।
- निर्धारित वस्तु के छाया और प्रकाश के क्षेत्रों का निरीक्षण कर उपयुक्त छायांकन दिखाया जा सकता है।
- प्राथमिक छायांकन और रेखाकंन 2बी पैंसिल द्वारा कर सकते हैं।
- मध्यम और गहरे छायांकन के लिए 4बी और 6बी पैंसिल का प्रयोग करें।
- प्रकाश व छाया के अनुसार ही समरूप छायांकन किया जाए।

रंगों से सौंदर्य की अनुभूति

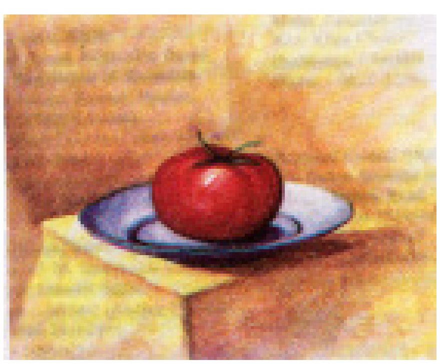

चित्र 4

- जल रंगों के प्रयोग से चित्र सुंदर और वास्तविक दिखाई देते हैं।
- पैंसिल छायांकन की तरह जल रंगों को भी हल्के से गहरी छाया या प्रकाश दिखाने के लिए प्रयोग कर सकते हैं।
- जब वस्तु पर प्रकाश या छाया पड़ती है तो एक ही रंग में विभिन्न प्रकार की संगति (टोन) नजर आती है।
- टोन के कोमल तथा उत्तम मिश्रण के द्वारा वस्तुओं के वास्तविक रूप को दर्शाया जा सकता है।

वस्तु का रेखांकन और रंग कैसे करें?

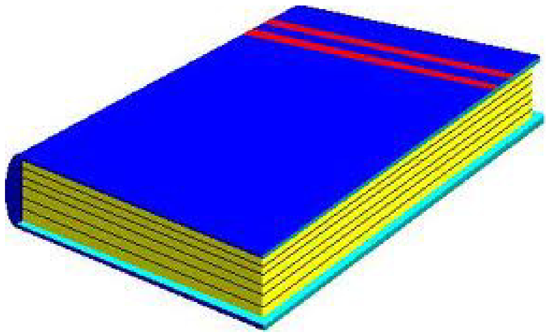

इस वस्तु का रेखांकन और चित्रण करना है।

चरण - 1

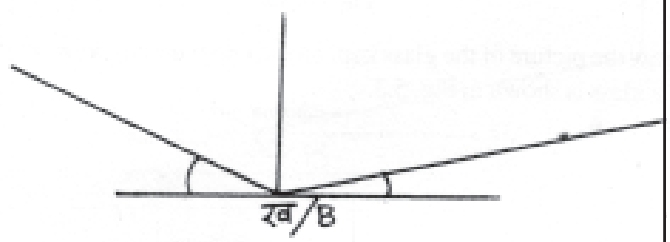

- जिस वस्तु का चित्र बनाना है उस वस्तु को आंख की सतह से नीचे की ओर कुछ दूरी पर किसी सतह पर रखें।
- सर्वप्रथम आधार रेखा खीचें।
- आधार रेखा के बीचों-बीच एक लम्बवत् रेखा बनाएं तथा दोनों तरफ दो रेखाएं जो भी कोण बना रही हैं वैसा ही कोण बनाते हुए रेखा खीचें।

चरण - 2

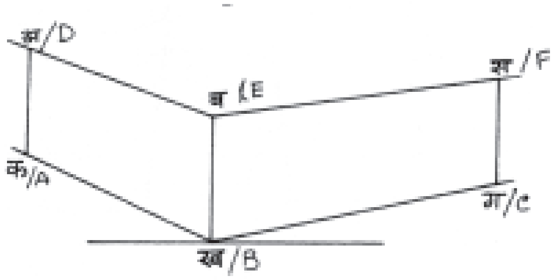

- किताब की ऊंचाई मापने के बाद हम किताब की मोटाई दर्शाने के लिए कोण रेखा के अनुसार समानान्तर रेखा खीचें।

चरण - 3

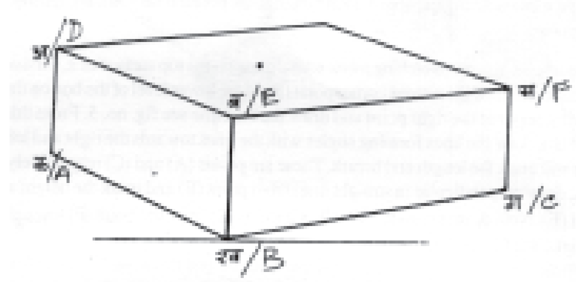

- किताब का आकार पूरा करने के लिए समानान्तर रेखा को कोणीय रेखा के साथ जोड़ें।
- छायाकंन करने के लिए 2बी, 4बी, 6बी पैंसिल का प्रयोग करें।
- छायाकंन में समरूपता रखें।

क्या आप जानते हैं?

- निरंतर अभ्यास द्वारा विद्यार्थी किसी भी वस्तु को बना सकता है।
- नाप का मानसिक अवलोकन करके सटीक चित्र बनाया जा सकता है।
- छायाकंन आयतन और वास्तविकता प्रदान करता है।

स्व-मूल्यांकन

- ड्राइंग पेपर पर गिलास का चित्र बनाएं।
- एक वस्तु के प्रयोग द्वारा संयोजन दर्शायें।
- विभिन्न माध्यमों की वस्तुओं जैसे शीशा, धातु, लकड़ी इत्यादि का प्रयोग करें।

मूल्यांकन के उत्तर

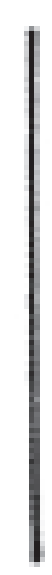 चित्र 1	चरण -1 ● गिलास का रेखांकन करने के लिए केन्द्र बिन्दु से खड़ी रेखा खीचें।
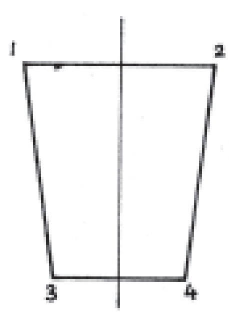 चित्र 2	चरण -2 ● खड़ी रेखा के प्रयोग से गिलास को दो समान हिस्सों में विभाजित करें।
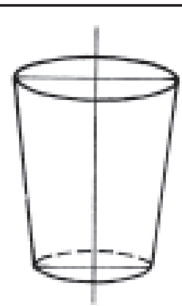 चित्र 3	चरण -3 ● घुमावदार रेखाओं के द्वारा गिलास का मुंह एवं सतह को बनाकर चित्र को समाप्त करें।

पाठ संख्या – 2 **प्रकृति चित्रण**

प्रस्तावना

प्रकृति सदैव कलाकारों की प्रेरणा स्रोत रही है। कलाकार प्रकृति की सुंदरता की अनुभूति कर उसे चित्रित करते हैं। पेड़-पौधे, फूलों के अनेक रूप तथा रंग, पर्वत शृंखलाएं कलाकारों के आकर्षण के प्रिय विषय रहे हैं।

प्रयोग में आने वाली सामग्री

1. ड्राईंग बोर्ड
2. ड्राईंग पेपर व कैनवास
3. ड्राईंग पिन एवं ईजल
4. पैंसिल, पैन एवम् स्याही, पेस्टल एवं मोम रंग
5. जल रंग, पोस्टर रंग, एक्रैलिक रंग, तेल रंग
6. ब्रश
7. कलर मिश्रण प्लेट

प्रकृति चित्रण में याद रखने वाले प्रमुख तत्व

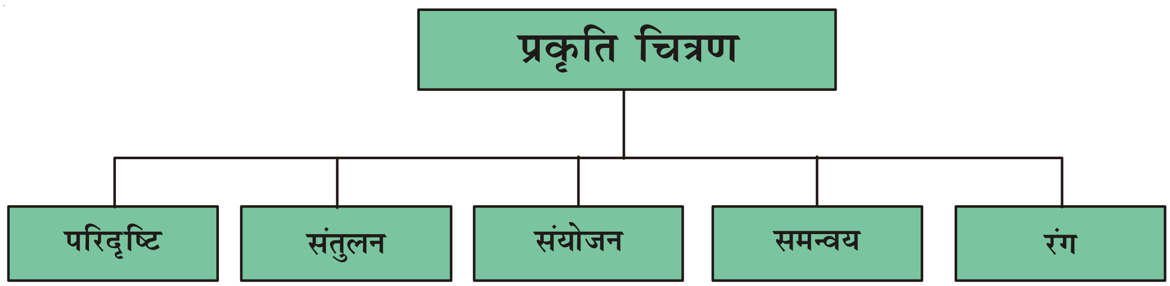

परिदृष्टि के आधारभूत नियमों को जानिये

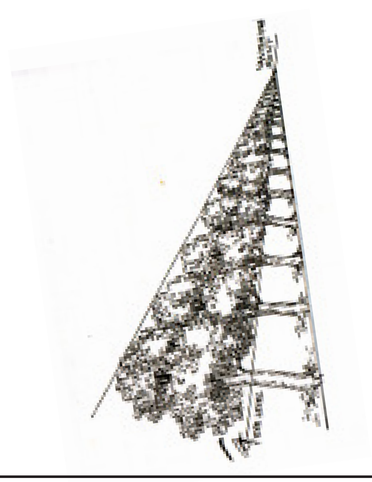

चित्र 1

- सामने से पीछे की ओर जाती हुई वस्तु आकार में छोटी होती जाती है।
- दूरी के अनुसार वस्तु का धुंधलापन निर्भर करता है।
- सभी रेखाएं क्षितिज की तरफ जाती हुई एक लुप्त बिन्दु से मिलती हुई प्रतीत होती हैं।

संतुलन की भूमिका

चित्र 2

- पेपर में उपलब्ध स्थान को संतुलित रखें। अगर पेपर के एक छोर पर वृक्ष दर्शाया गया है तो संयोजन में संतुलन रखने के लिए दूसरे छोर पर भी कोई अन्य आकार बनाएं।

पेपर पर संयोजन व्यवस्था

चित्र 3

- पेपर पर उपलब्ध स्थान को किसी भी आकार से भरें।
- सभी आकार संतुलित और समन्वयित होने चाहिए।
- स्थान की गहराई को दर्शाने के लिए परिदृष्टि का प्रयोग करें।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं का सटीक प्रयोग अच्छे संयोजन में सहायक होगा।

समन्वय प्रकृति चित्रण के सौन्दर्य को बढ़ाता है।

चित्र 4

- रंग, रेखा और आकार का आपसी तालमेल एवं लयात्मक गति समन्वय लाती है।
- समन्वय, विरोधात्मक तत्वों में एकरूपता लाने में सहायता करता है।

रंगों का महत्व

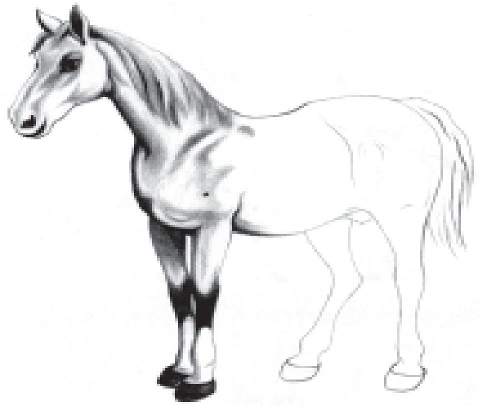

चित्र 5

- चित्र में रंगों का प्रयोग केवल सुंदरता को ही नहीं बढ़ाता अपितु तत्वों को वास्तविकता भी देते हैं।
- रंगों में सजावट के साथ-साथ सांकेतिक मूल्य भी हैं।

प्रकृति चित्रण के विभिन्न चरणों को सीखें

चित्र 6

चरण - 1

- प्रकृति चित्रण के लिए आप कोई भी माध्यम चुन सकते हैं।
- जल रंग का प्रयोग कर सकते हैं (पोस्टर रंग एवं जल रंग ट्यूब)।
- पत्तियों और तने के साथ फूलों का गुच्छा अपने सामने सजाएं।
- सख्त या हैण्डमैड पेपर बोर्ड पर रखें (आकार ½ इम्पीरियल)।
- HB पैंसिल से फूलों का रेखांकन करें।

चरण - 2	चरण - 3
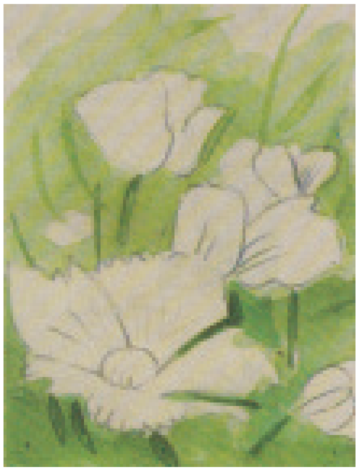 चित्र 7 • गाढ़े रंग को प्लेट में घोलें। • पीले फूल और हरी पत्तियों को उभारने के लिए पीछे की सतह में कोबाल्ट ब्लु और क्रिमसन रैड रंग को चुनें। • पिछली सतह में बारीक स्थानों पर चार नम्बर ब्रश का प्रयोग करें और चौड़ी सतह के लिए आठ नम्बर ब्रश का प्रयोग करें।	 चित्र 8 • फूलों को क्रोम पीला रंग लगाएं (अगर फूल पीले हैं)। • कोमल प्रभाव लाने के लिए क्रोम पीले की गहरी सतह पर यैलो ऑकर का प्रयोग करें। • तनें और पत्तियों पर हल्का हरा रंग लगाएं। छायाकंन के लिए गहरा हरा और कहीं-कहीं ब्राऊन रंग का प्रयोग करें।

क्या आप जानते हैं?

- स्कैचिंग (रेखाचित्र) प्रकृति चित्रण का एक महत्वपूर्ण भाग है।
- अच्छे संयोजन के लिए परिदृष्टि, संतुलन एवं समन्वय का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- प्रकृति रंगों से भरपूर है अपने चित्र में इन रंगों को संजोकर आनन्द का अनुभव करें।

स्व-मूल्यांकन

- मेज पर फूलों का एक गुच्छा रखें, पैंसिल से इसका रेखांकन करें।
- कैमरे से तस्वीर खींचकर अपने रेखांकन से इसकी तुलना करें।
- अगर आप संतुष्ट हैं तो रंगों का प्रयोग करें।
- अपनी प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए इन्हीं तरीकों द्वारा (स्ट्रीट, गार्डन, पहाड़ी क्षेत्र, बगीचा) के साथ पुनरावृत्ति करें।

मूल्यांकन के उत्तर

 चित्र संख्या 1	**चरण 1** ● गुलाबी फूलों को फूलदान में रखें। ● HB पैंसिल से फूलों का रेखांकन करें। ● कैमरे से तस्वीर खींचकर अपने रेखांकन से इसकी तुलना करें।
 चित्र संख्या 2	**चरण - 2** ● हल्के हरे रंग में पानी मिलाकर प्लेट में घोलें। ● आठ नम्बर ब्रश से पिछली सतह में रंग भरें। ● कुछ देर बाद तने में गाढ़ा हरा रंग भरें।
 चित्र संख्या 3	**चरण - 3** ● क्रिमशन लाल रंग को पानी के साथ घोलकर हल्का लाल रंग बनाएं और इस रंग को फूलों में लगाएं।

चित्र संख्या 4

चरण - 4

- अंत में क्रिमशन लाल रंग को ब्रश नं. चार की सहायता से लगाकर उत्तम परिणाम लाएं।

पाठ संख्या – 3 **मानव व पशु आकृतियाँ**

प्रस्तावना

हमारी दुनिया विभिन्न प्रकार के जीवों से भरपूर है। उनमें कुछ दो पैरों पर खड़े होते हैं और कुछ चार पैरों पर। इनमें से कुछ आकाश में उड़ सकते हैं और कुछ पानी में तैर सकते हैं। एक कलाकार को इन जीवों के बारे में जानकारी होनी चाहिए और इनको रेखा और रंगों में चित्रित करना सीखना चाहिए। इन जीवों में मानव, पशु और पक्षी अत्यंत रोचक हैं।

प्रयोग में आने वाली सामग्री

- काट्रेज पेपर या न्यूज प्रिंट पेपर, स्कैच बुक।
- H.B. पैन्सिल (पतली और कठोर रेखा के लिए) 2बी और 4बी पैन्सिल (विभिन्न मोटाई की कोमल रेखाओं के लिए)।
- 6बी पैन्सिल (गाढ़े टोन के लिए)।
- रबड़।

मानव और पशु आकृतियों में याद रखने वाले प्रमुख तत्व

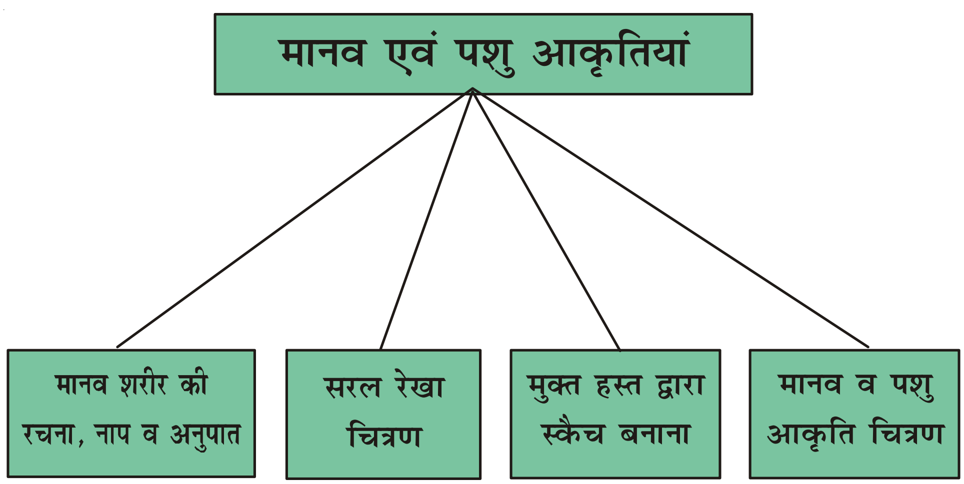

मानव शरीर की रचना, नाप व अनुपात

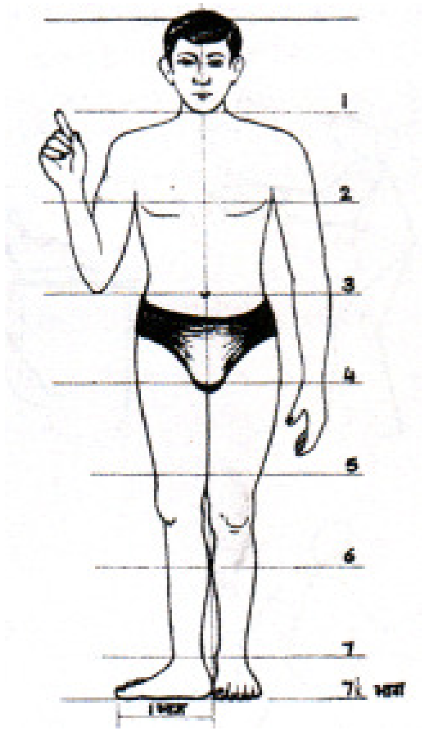

चित्र 1

- सामान्यतः शारीरिक रचना आयु के अनुसार बदलती रहती है।
- एक पुरुष का नाप, अनुपात और शारीरिक गठन साढ़े सात यूनिट में विभाजित कर सकते हैं। सिर से ठोड़ी तक एक यूनिट, ठोड़ी से लेकर छाती तक दो यूनिट, छाती से लेकर नाभि तक तीसरी यूनिट, नाभि से कुल्हे तक चौथी यूनिट, कुल्हे से घुटने तक पांचवी यूनिट, घुटने से पिण्डली तक छठी यूनिट, पिण्डली से एड़ी तक सातवीं यूनिट एवं पैर आधा यूनिट।

सरल रेखा चित्रण

चित्र 2

- शरीर की रचना और क्रियाशीलता को समझने के लिए सरल रेखा चित्रांकन बहुत महत्वपूर्ण है।
- यह आकृति के अनुपात को समझने में भी सहायक है जिसके द्वारा आयतन से चित्रांकन संभव है।

मुक्त हस्त स्कैच बनाना

चित्र 3

- सजीव मॉडल का स्कैच बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मॉडल की विशिष्टता और क्रियाशीलता को अनुभूत करने में सहायक होता है (मानव व पशु आकृति)।
- सरल रेखा चित्रण बिना किसी पूर्व निर्धारित विधि से रचनात्मक चित्रांकन में सरल रेखा चित्रण का ज्ञान सहायक होता है।

मानव व पशु आकृतियों में भेद

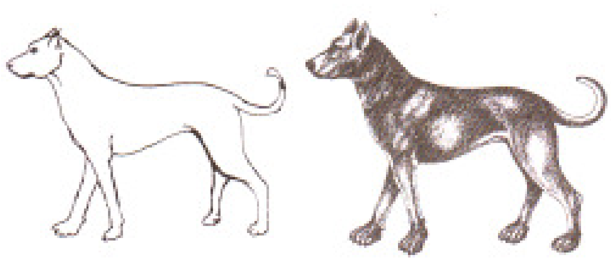

चित्र 4

- मानव व पशु आकृतियों में मूल भेद है कि मानव आकृतियां उर्ध्वाधर (वर्टिकल) तथा पशु आकृतियां क्षैतिज (होरीजोन्टल) होती हैं।
- चित्रकार को पशु आकृति का रेखांकन करने में बहुत तेजी दिखानी चाहिए क्योंकि यह जीव मानव की तरह एक स्थिति में बहुत देर तक नहीं रह सकता।
- मानव आकृति में अनुपात और नाप के निर्दिष्ट नियमों का पालन किया जाता है।
- पशुओं, पक्षियों व अन्य जीवों में अनुपात व नाप के लिए भिन्न निर्दिष्ट नियमों का पालन किया जाता है क्योंकि इनकी शारीरिक रचना भिन्न होती है।
- निरंतर अभ्यास कौशल में वृद्धि करता है।

आइये, अब पशु चित्रण के विभिन्न चरणों को सीखें

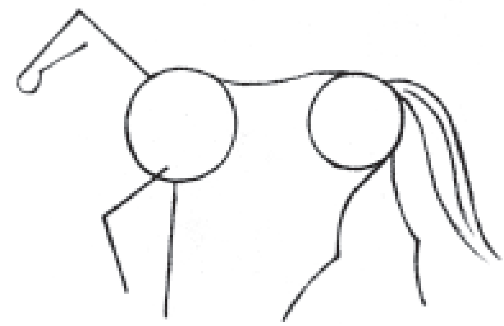

चित्र 1

घोड़े का रेखांकन

चरण 1

- घोड़े के पिछले एवं अगले हिस्से को दर्शाने के लिए अनुपातिक दूरियों में दो गोले रेखांकित कीजिए।
- दोनों गोलों को रेखा के द्वारा जोड़कर घोड़े की पीठ बनाइए।
- पैरों के लिए चार रेखाएं खीचें।
- सिर के लिए त्रिभुज एवं पूंछ के लिए लयबद्ध रेखा खींचिए।

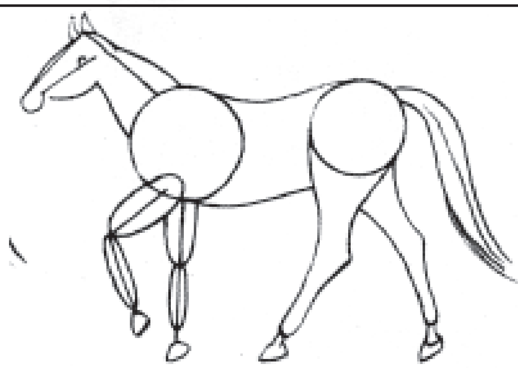

चित्र 2

चरण-2

- ढांचे को चारों तरफ से रेखांकित कर आयतन दीजिए।

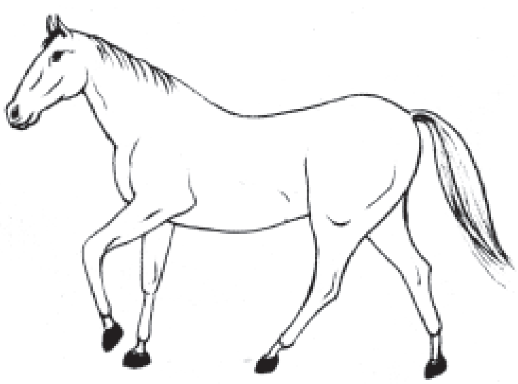

चित्र 3

चरण-3

- घोड़े के शारीरिक अंगों को रेखांकित कर पूर्णरूप में लाएं।
- बाहरी रेखा को छोड़कर अनावश्यक रेखाओं को मिटा दें।
- आकृति में कुछ और रेखाएं जोड़कर बारीकियां लाएं।

विभिन्न चरणों में सरल रेखा से मानव आकृति का चित्रण

चित्र 1	**चरण 1** • दो मानव आकृतियों द्वारा डांडिया नृत्य करने के संयोजन का चयन कीजिए। • सरल रेखा द्वारा दो नृत्य करती हुई आकृतियों को रेखांकित कीजिए।
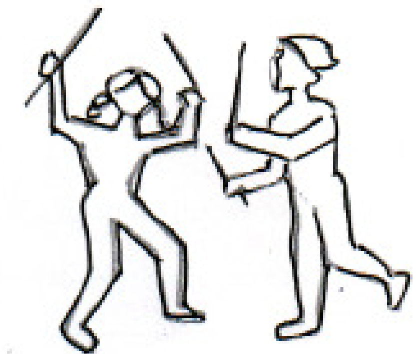 चित्र 2	**चरण 2** • ढांचे से धड़ को रेखांकित करके आकृति में आयतन लाएं।
चित्र 3	**चरण 3** • लड़का और लड़की की शारीरिक संरचना की विशेषताओं को ध्यान में रखकर रेखाओं से मानव आकृति की पूर्ण रचना करें।

क्या आप जानते हैं?

- एक वयस्क पुरुष का शारीरिक अनुपात साढ़े सात यूनिट है।
- पशु आकृति के विपरीत मानव मुखाकृति के द्वारा अनेक भाव प्रदर्शित किए जा सकते हैं।

स्व-मूल्यांकन

- विभिन्न चरणों के द्वारा मुर्गी का रेखा चित्रण कीजिए।
- पेस्टल रंग से रेखाचित्र को भरें।

मूल्यांकन के उत्तर

	I. सरल रेखा चित्र बनाएं।
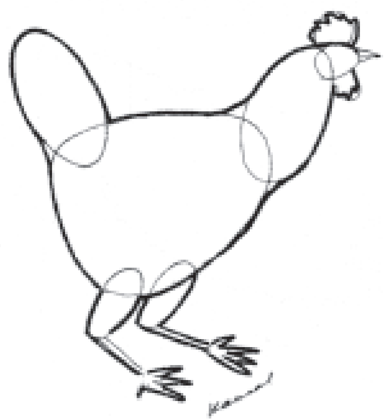	II. बाहरी रूपरेखा को जोड़कर स्वरूप दें।
	III. लाल क्रोम पीला, ब्राऊन, सफेद एवं काले रंग के पेस्टल रंगों का प्रयोग रंग भरने के लिए प्रयोग करें।

पाठ संख्या – 4 **संयोजन**

प्रस्तावना

संयोजन अंतर्आत्मा से निकली हुई वह अनुभूति है जिसको कलाकार रंग, रेखा, आकार इत्यादि से इस प्रकार से सुसज्जित करता है जिससे कि एक अच्छे संयोजन का निर्माण हो सके।

एक संयोजन में सभी तत्वों का समावेश, समन्वय और लय के साथ होना चाहिए।

एक संयोजन तभी संपूर्ण व आकर्षक लगता है जब उसमें परिदृष्टि में गहराई और रंगों का उचित समन्वय हो।

प्रयोग में आने वाली सामग्री

- रेखांकन किसी भी माध्यम में किया जा सकता है।
- ड्राईंग बोर्ड, पिन।
- ड्राईंग पेपर एवम् कैनवास।
- पैन्सिल रंग, ऑयल पेस्टल, मोम रंग एवम् स्याही।
- जल रंग, पोस्टर रंग, एक्रेलिक रंग एवम् तैल रंग।
- कोलाज (रंगीन कागज और बेकार वस्तुओं से)।
- ब्रश, प्लेट, कैंची और ग्लू (गोंद)।

संयोजन में याद रखने वाले प्रमुख तत्व

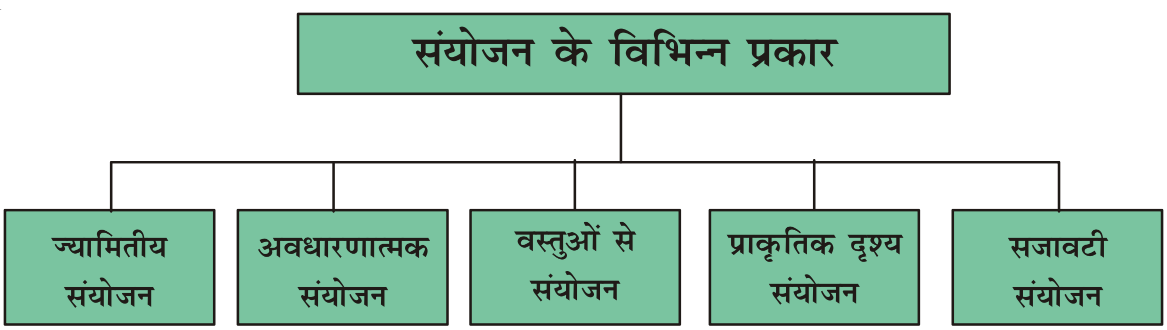

ज्यामितीय संयोजन

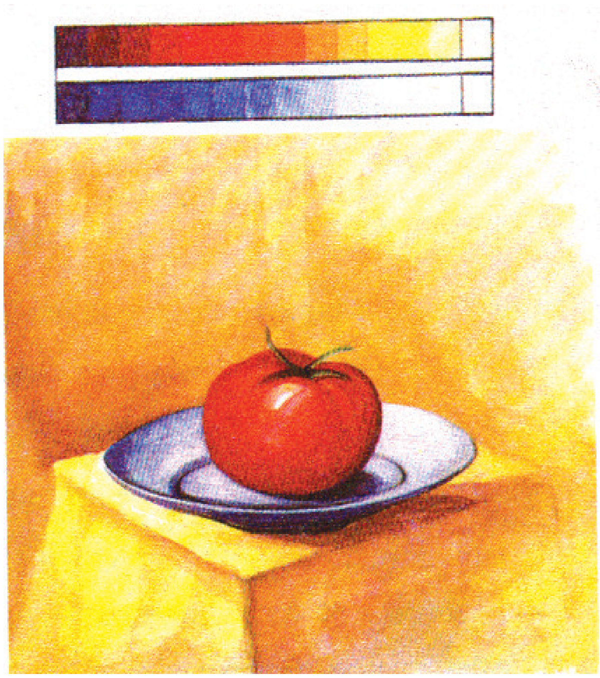

चित्र 1

- वह संयोजन जिसमें ज्यामितीय आकृतियां प्रयोग की जाती हैं उसे ज्यामितीय संयोजन कहते हैं।
- एक सादा कागज लीजिए।
- पैन्सिल से विभिन्न आकृतियां रेखांकित कीजिए।
- आकृतियों को सटीक आकार देने के लिए पैमाने का प्रयोग करें।
- संयोजन को अधिक रूचिकर बनाने के लिए चौकोर, त्रिकोणाकार, गोलाकार आकृतियां बनाकर काटें।
- इन आकृतियों में रंग भरें।
- रंग और आकृतियों में संतुलन होना चाहिए जिससे कि संयोजन समन्वयपूर्ण लगे।

अवधारणात्मक संयोजन

चित्र 2

- कभी-कभी आप अपनी अवधारणा को कहानी के अतिरिक्त चित्रकला के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- जो आकार और रंग हम प्रतीक रूप में प्रयोग करते हैं वह पहचान से परे भी हो सकते हैं।
- इस प्रकार अवधारणात्मक संयोजन कभी-कभी अमूर्त हो सकता है।
- इस विशेष चित्र में सूर्य, मछली का कंकाल और अन्य मोटिफ, चिह्नों के रूप में प्रयोग किए गए हैं।

वस्तुओं से संयोजन

चित्र 3

- कुछ वस्तुओं का चयन करें जैसे फैविकॉल और दवाई की शीशी और उन्हें समतल धरातल पर रखें।
- पृष्ठभूमि के लिए पीछे एक परदा लगाएं।
- अपनी दृष्टि से माप कर वस्तु का रेखांकन करें।
- गहरे स्थान को हल्के से दर्शायें।
- प्लेट में जल रंग को रखें। साथ ही ब्रश व पानी भी तैयार करें।
- हल्के से गहरे की ओर रंग भरें। ऊपरी चमक को दर्शाने के लिए कागज को सफेद ही छोड़ दें।

प्राकृतिक दृश्य संयोजन

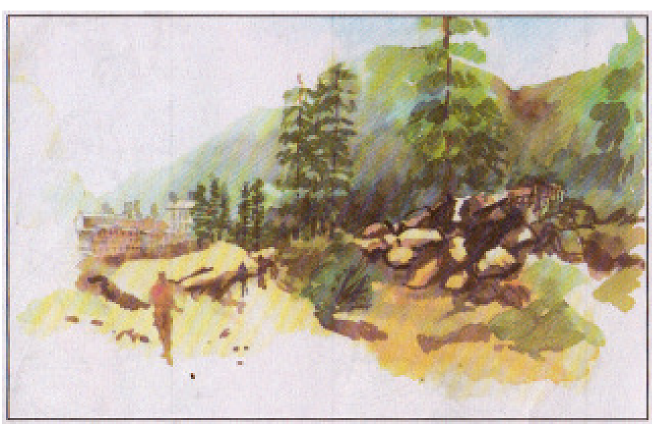

चित्र 4

- प्राकृतिक दृश्य संयोजन में गांव, शहर, पर्वत, नदियां, नहरें, समुद्र और जंगलों पर आधारित रेखांकन करें।
- साधारणतः प्रकृति आधारित संयोजन में क्षैतिज (होरीजोन्टल) प्रारूप का प्रयोग किया जाता है।
- इच्छित दृश्य को रेखांकित करें।
- संयोजन में आकर्षक केन्द्र बिन्दु होना चाहिए।
- छाया और प्रकाश क्षेत्र को दर्शाने के लिए हल्की पैंसिल का प्रयोग करें।
- हाईलाइट क्षेत्र में रंगों का प्रयोग न करते हुए ऊपर से नीचे की तरफ रंग भरें।

सजावटी संयोजन

चित्र 5

- प्राकृतिक वस्तुओं के आधार पर फूल, पत्ते, पेड़, लताओं, चिड़िया और गिलहरी आदि को रेखांकित करें।
- इस रेखाकंन को विभिन्न तरह से डिजाइन का रूप दीजिए तथा सजावटी आकार के द्वारा संयोजित कीजिए।
- एक अच्छे संयोजन में रंगों के समन्वय एवम् लय का महत्व होना चाहिए।

संयोजन का रेखाकंन और रंग कैसे भरें

चित्र 1

चरण- 1

- अपनी पसन्द का कोई भी दृश्य रेखांकित करें।
- आकर्षण के लिए केन्द्र बिन्दु निर्धारित करें।
- यहां नाव को ही परिदृष्टि (परसपैक्टिव) में रखते हुए इसे ही संयोजन का केन्द्र बिन्दु माना गया है।
- हल्के, मध्यम और गहरे स्थान को निर्धारित करें।
- संयोजन को ऊपर की ओर से रंग भरना शुरू करें।

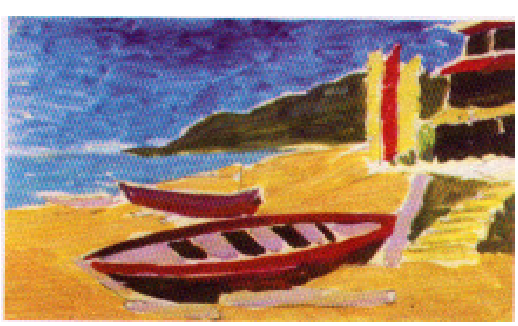

चित्र 2

चरण - 2

- आप अपनी आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार के ब्रश (गोल और सपाट) का प्रयोग करें।
- हाईलाइट स्थान को छोड़ते हुए बृहत क्षेत्र जैसे आकाश के लिए फ्लैट (सपाट) ब्रश का प्रयोग करें।

चित्र 3

चरण - 3

- पहली परत सूख जाने के बाद मध्यम रंग संगति (टॉन) दें।
- ध्यान रखें कि रंग न फैले।
- गहरी रंग संगति को लगाएं।
- आवश्यकतानुसार पतले ब्रश से चित्र की सुंदरता बढ़ाएं।

क्या आप जानते हैं?

- संयोजन में एक केन्द्र बिन्दु (फॉकल प्वाइंट) होना चाहिए।
- रूचिकर तत्व, रंग, छाया, रंग संगति का प्रयोग संयोजन को आनन्ददायक बनाते हैं।
- तैलीय एवं एक्रैलिक रंगों में स्ट्रॉक (Strokes) बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

स्व-मूल्यांकन

- एक संयोजन में ज्यामितीय जैसे आयताकार, चौकोर, त्रिभुज और गोले का आकार बनाएं।
- अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग करते हुए एक प्राकृतिक दृश्य का संयोजन करें।
- एक सजावटी संयोजन में फूल, पत्तियां, तितलियों को बनाएं।

मूल्यांकन के उत्तर

उत्तर 1

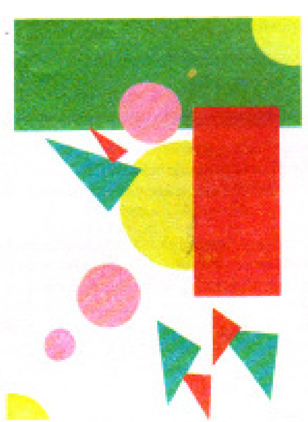

उत्तर 2

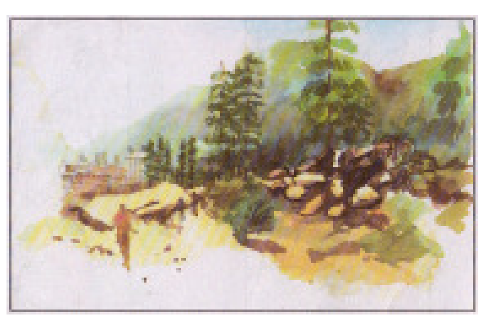

उत्तर 3